बोझ की साझेदारी

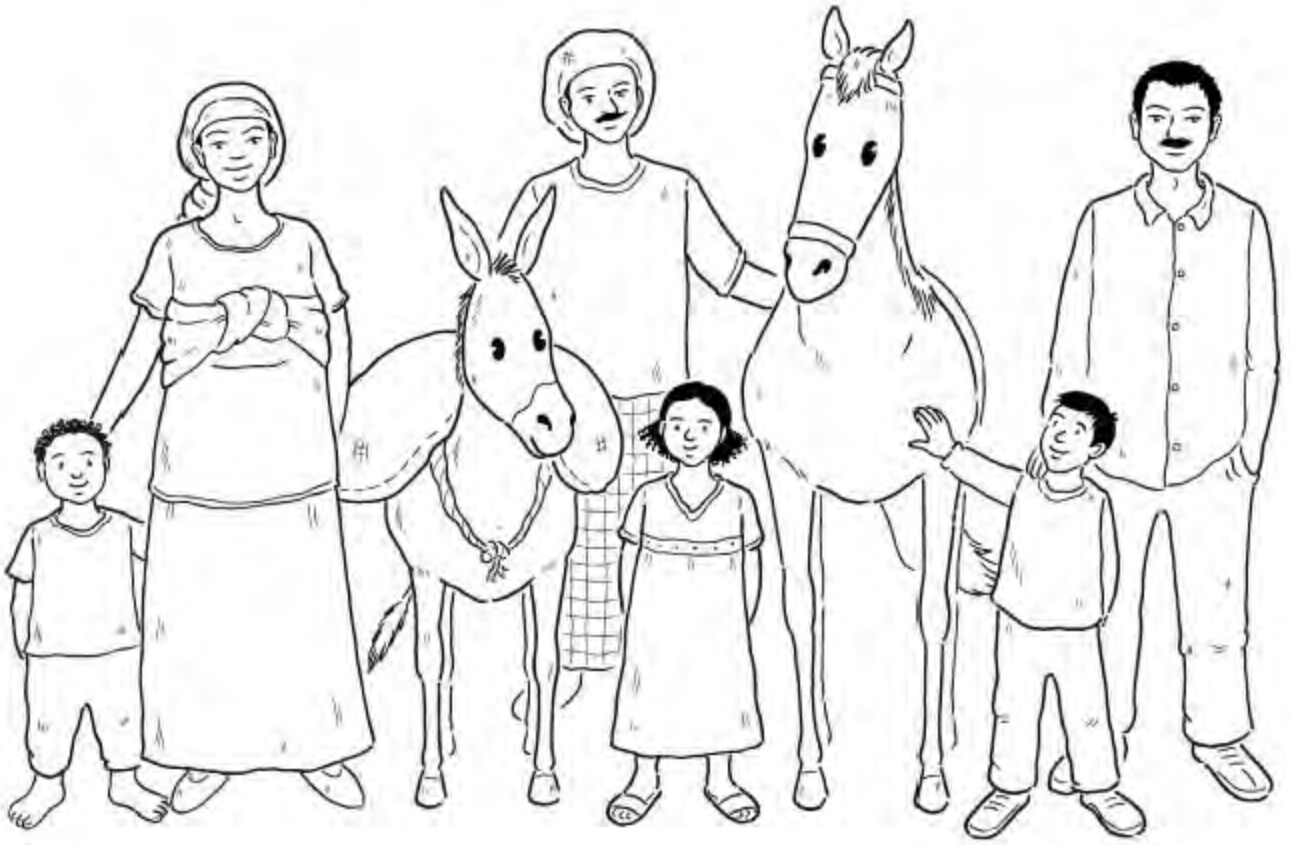

कामकाजी पशुओं के कल्याण को सामूहिक गतिविधियों द्वारा सुनिश्चित करने हेतु एक मार्गदर्शिका

लिसा वैन डिज्क,जॉय प्रिचर्ड, एस0 के0 प्रधान एवं किम्बरली वेल्स

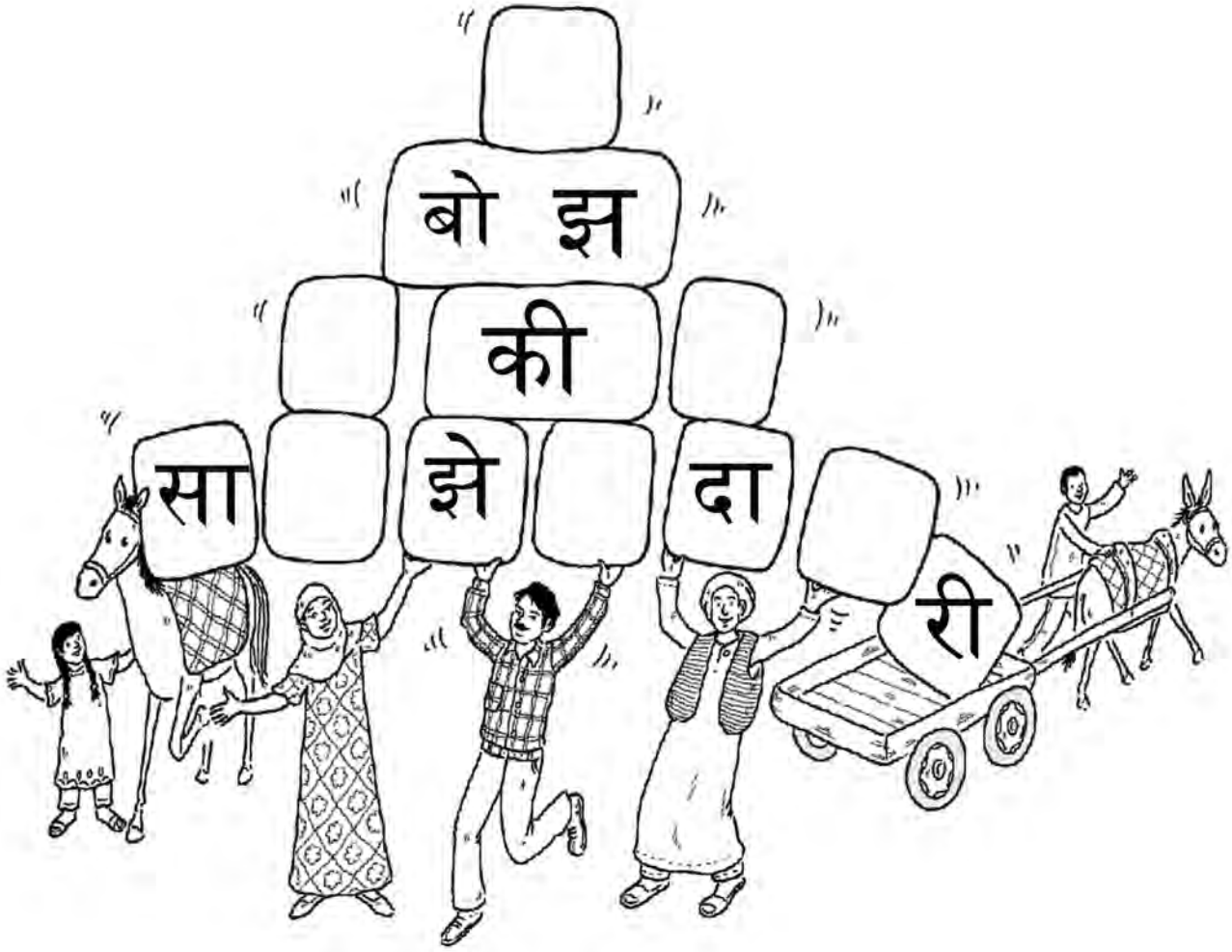

कामकाजी पशुओं के कल्याण को सामूहिक गतिविधियों द्वारा सुनिश्चित करने हेतु एक मार्गदर्शिका

लिसा वैन डिज्क,जॉय प्रिचर्ड, एस0 के0 प्रधान एवं किम्बरली वेल्स

हिन्दी अनुवादन एवं सम्पादन

रमेश कुमार रंजन

इस मार्गदर्शिका हेतु संस्तुतियांः–

प्राक्सिस के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में एक प्रतिभागी द्वारा पूछा गया एक विचित्र सवाल था कि ''हम पशुओं के लिए पी0आर0ए0 का प्रयोग कैसे करेंगे? इस सवाल ने पशु कल्याण हेतु पी0आर0ए0 टूल के खोज की यात्रा को शुरू किया और प्राक्सिस अपने आपको इस यात्रा के साथ सम्बद्ध होने के कारण सौभाग्यशाली समझता है।''बोझ की साझेदारी'' अपने नवाचार (इनोवेशन) एवं गहराई तक सहभागिता हेतु समर्पित होने के कारण संस्तुति के योग्य है। पशु कल्याण में सलंग्न व्यक्तियों ही नहीं बल्कि अन्य सामाजिक विकास कार्यक्रम में सलंग्न व्यक्तियों के लिए भी यह पुस्तक आवश्यक रूप से पढने एवं प्रयोग करने योग्य है।

मि0 टॉम थामस, मुख्य कामकाजी, प्राक्सिस, इन्स्टीटयूट फोर पारटिसिपेटरी प्राक्टिसेज, इण्डिया

''काफी दिनों के इन्तजार के बाद आई यह पुस्तक प्राक्टीशनर एवं पशु कल्याण संस्थाओं को कामकाजी पशुओं एवं कार्यकारी पशुओं को रखने वाले परिवारों, उनके साथ काम करने वालों के साथ काम करने एवं अपने कार्यों को बढ़ाने में मदद करेगा।लेखकों ने पशु कल्याण (प्रिचर्ड एवं वेल्स) एवं समुदाय आधारित सहभागी तरीकों (वैन डिज्क एवं प्रधान) के उच्चतर ज्ञान के सम्मिश्रिण को सुंदरता पूर्वक आसानी से प्रयोग कर सकने वाले रूप में प्रस्तुत किया है। कोई भी व्यक्ति जो कामकाजी अश्व प्रजाति अथवा अन्य पशुओं के कल्याण में सलंग्न हैं के लिए एक अति आवश्यक मार्गदर्शिका है।

डेविड हैड्रिल, वेटेनरी सलाहकार, वेटवर्क, यूनाइटेड किंगडम के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के सदस्य

अपने तरह का यह एक अभूतपूर्व कार्य है जो एशिया, अफ्रीका एवं लेटिन अमेरिका के करोड़ो गरीब लोगों, जो अपने आमदनी के लिए पूर्णतः या अंशतः कामकाजी पशुओं पर निर्भर करते हैं के आजीविका एवं सुख समृद्धि को सीधे तौर पर बढ़ाने में काफी योगदान देगा। सहभागी टूलों का दृश्य अवयवों के साथ अधिकाधिक प्रयोग स्थानीय परिस्थितियों को आसान एव बेहतर रूप से समझने में मदद के साथ–साथ इस मार्गदर्शिका को प्रयोग हेतु दोस्ताना, उचित एवं आकर्षक बनाता है।

डा0 कमलकर, चयेयरमेन, सी0एल0टी0एस0 फाउन्डेशन, कलकत्ता, भारत

यह आकर्षित करने वाली मार्गदर्शिका कामकाजी पशुओं के सम्बन्ध में ज्ञान एवं लगाव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी बहुत ही आसान रूप में देता है। यह उपदेश नहीं देता है। कामकाजी पशु एवं उनके स्वामी एक दूसरे पर आपस में किस प्रकार निर्भर हैं एवं पशु कल्याण समझ क्या है की समझ विकसित करने के लिए पढ़ने वालों को अपने आपको तैयार रखना चाहिए उसके बाद ही उनको एक प्रायोगिक टूल बॉक्स मिलेगा जिसे कि वो अपने कार्यक्षेत्र में समुदाय के साथ प्रयोग कर पायेंगे चाहे प्रयोग करने वाले की साक्षरता कम हों या ज्यादा। काफी संख्या में व्यक्ति एवं पशु इस मार्गदर्शिका के परिणामस्वरूप बेहतर अनुभव करने वाले हैं।

जॉन वेस्टर, इमेरीटस प्रोफेसर, एनीमल हरबैण्ड्री ब्रिस्टल विश्वविद्यालय यू0के0

www.practicalactionpublishing.org

''बोझ की साझेदारी'' एक अद्भूत एवं कम्प्रिहेन्सिव फिल्ड मार्गदर्शिका पशु कल्याण हेतु कार्य करने वाले सामुदायिक उत्प्रेरकों के लिए है। चित्रांकन आकर्षक है तथा प्रयोग की गई भाषा सामान्य एवं पढ़ने योग्य है। सामुदायिक सहभागिता एवं पशु कल्याण के लिए कार्य करने वालों के लिए यह एक आवश्यक पुस्तक है।

सोमेश कुमार, भारतीय प्रशसनिक अधिकारी

ब्रुक का महत्वपूर्ण क्षेत्र स्तरीय अनुभवों का समावेश इस मार्गदर्शिका को अत्यधिक मूल्यवान बनाने के साथ ही इसे अद्वितीय व पढ़ने हेतु आवश्यक बनाता है। यह मार्गदर्शिका समझने योग्य एवं उत्प्रेरित करने वाले उदाहरणों से भरपूर है जो कि इसे पढ़ने हेतु आकर्षित करती है। वास्तविक जीवन से प्रायोगिक समझ एवं सुझाव (Feedback) काफी अमूल्य है। इस तरह के उदाहरणों, समझ एवं सुझावों की तलाश मुझे काफी वर्षो से थी। उस समय जब मैं एक प्रयोगकर्ता था एवं किसानों को अपना समय व धन पशुओं के कल्याण के लिए (खर्च) Invest करने हेतु उत्प्रेरित कर रहा था अगर इस तरह के उदाहरण मुझे मिलते तो मैं काफी खुश होता।

डा0 एन्ड्रिया गैविन्ली, हेड ऑफ एनीमल वेलफेयर, हेल्थ एण्ड कन्सयूमरस, डाइरेक्ओरेट, जेनेरल, यूरोपियन कमीशन

मूलप्रति–

प्राक्टिकल एक्शन पब्लिशिंग लि0
सुमेकर सेन्टर फोर टेकनोलोजी एण्ड डेवलपमेंट
बरटन आन डनसमोर, रगबी,
वारवीकशायर, सी वी 239 क्यू जेड, यू0 के0
www.practicalactionpublishing.org
© The Brooke, 2011
ISBN 978185397196

मुख्य पृष्ठ छाया चित्र – © मार्था हार्डी @ जी0सी0आई0
कवर डिजायनः प्राक्टिकल एक्शन पब्लिशिंग
चित्रांकन : © मार्था हार्डी @ जी0सी0आई0 (भाग–1 एवं 2) एवं अभिताभ पाण्डेय (भाग–3)
टाइपसेट एवं मुद्रण – रॉयल प्रेस, नई दिल्ली–110003

आमुख

Sharing the Load (बोझ की साझेदारी) पुस्तक को पढ़ते हुये मुझे हमेशा लगता रहा है कि इसे अधिक पाठकों तक पहुँचाया जाना चाहिये, विशेषतः भारत के सन्दर्भ में जहाँ अंग्रेजी के पाठ्कों की अपेक्षा हिन्दी के पाठकों का एक बड़ा वर्ग है। यह इच्छा जमीनी स्तर पर नहीं आ पाती यदि इस पुस्तक के लेखकगण लीसा वैन डिज्क, जॉय प्रिचार्ड, सुबीर कुमार प्रधान एवं किम्बर्ले वैल्स ने पुस्तक के हिन्दी अनुवादन की अनुमति नहीं दी होती। मैं उनकी सहृदयता को भुला नहीं पाऊँगा। साथ ही इस सन्दर्भ में, मैं रमेश कुमार रंजन, प्रोग्राम अधिकारी, ब्रूक भारत, को भी धन्यवाद देना चाहुँगा जिनके अथक प्रयास से इस पुस्तक का हिन्दी रूपान्तरण संभव हो सका।

यह रूपान्तरित पुस्तक अत्यधिक उपयोगी बन पड़ी है, क्योंकि अनुवादन में मूल पुस्तक की भावनाओं, सटीकताओं एवं सहजताओं का ध्यान रखा गया है। यह रूपान्तरण ब्रूक भारत के सहयोगियों द्वारा समय–समय पर आवश्यकतानुसार दिये गये अनुवादन एवं सम्पादन के साथ–साथ महत्वपूर्ण सुझावों के कारण संभव हो सका है अतः मैं इन सभी सहयोगी के प्रति उनके सहयोग के लिये धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

हमारे अथक प्रयास के बाद भी मुद्रण स्तर पर कुछ त्रुटियों का रह जाना संभव है, अतः इस प्रकार की गलती के लिये खेद है। साथ ही पाठकों से आशा है कि वे इन गलतियों से अनुवादक को अवश्य ही अवगत करायेंगे जिससे भविष्य में पुस्तक को और भी उपयोगी रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

धन्यवाद ।

मेजर जनरल (रिटा.) एम. एल. शर्मा
सी. ई. ओ.
ब्रूक भारत

आभार

सन 2006, जब मैंने ब्रूक इण्डिया के साथ अश्व प्रजाति के कल्याण के लिये काम करना स्वीकार किया था, मेरे लिये एक चुनौतीपूर्ण वर्ष था। सतत अश्व कल्याण सुनिश्चित करना एवं इसके लिये जी–तोड़ मेहनत करने वाले पशु मालिकों से बात करने के तरीकों को तलाशना अपने–आप में भागीरथ प्रयास था।

इसके लिये एक मात्र तरीका, जिससे सततता सुनिश्चित हो सकती है वह 'सहभागी विकास प्रक्रिया' सामने आयी। इसके प्रयोगों ने छोटी–छोटी सफलतायें भी दी। इन सफलताओं ने आग में घी का काम किया। इस सफलता से हम सभी का उत्साह दिन प्रति दिन बढ़ता चला गया।

सहभागी विकास प्रक्रियाओं के प्रयोग के उदाहरण कृषि, स्वास्थ्य, एवं अन्य कई क्षेत्रों में तो उपलब्ध थे, परन्तु अश्व कल्याण के क्षेत्र में कोई भी उदाहरण उपलब्ध नहीं था। इस प्रकार की स्थिति में भी हमने हिम्मत नहीं हारी, नये तरीकों की तलाश व उनके प्रभावी होने का प्रमाण एकत्र करते रहे।

इन नये–नये तरीकों को तलाशने में हमारे पूज्य गुरुजी श्री सुबीर कुमार प्रधान, सुश्री लिसा एवं डा0 जॉय प्रिचार्ड ने हमें लगातार प्रेरित/मदद किया। इस तलाश के क्रम में हमें सीख मिली कि सहभागी विकास से जुड़े लोगों के लिये अनवरत सीखते रहने की स्थिति में बने रहना अपने आप में कठिन कार्य है, विशेषकर अगर हम हर समय स्वयं को सम–सामयिक बनाये रखने की चुनौती को स्वीकार करते हैं। परन्तु अगर हम अपने अनुभवों की सामयिक साझेदारी करते रहें तो यह कार्य कुछ आसान हो जाता है।

हम आभारी हैं श्री सुबीर कुमार प्रधान, सुश्री लिसा एवं डा0 जॉय प्रिचार्ड के जिन्होंने हमारे अनुभवों को 'बोझ की साझेदारी'(Sharing the Load) के रुप में एक भागीरथ प्रयास के बाद मूर्तरुप दिया।

'बोझ की साझेदारी' (Sharing the Load) को जब पहली बार पढ़ा उसी पल ऐसा लगा कि इसका क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद न केवल इसे व्यापकता प्रदान करेगा अपितु उन अभ्यास कर्मियों तक यह जानकारी पहुँच पायेगी जिन्हें इसकी वास्तविक जरुरत है।

इसी सोच एवं उत्साह का परिणाम है कि यह पुस्तक 'बोझ की साझेदारी' (Sharing the Load) जो आपको सतत् अश्व कल्याण ही नहीं वरन सामुदायिक विकास के किसी भी क्षेत्र में सहभागी विकास प्रक्रियाओं की एक लयबद्ध कड़ी देगा जो सतत् विकास की डगर पर आसानी से ले जाते हुये और भी आगे बढ़ने हेतु प्रेरित भी करेगा।

अतः सर्वप्रथम मैं ब्रूक इण्डिया का आभारी हूँ जिसने मुझे इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद पर काम करने का अवसर दिया, क्योंकि हिन्दी रुपान्तरण की प्रक्रिया अपने–आप में अत्यन्त ही आनन्ददायक एवं ज्ञानवर्द्धक रही।
मै सहृदय आभारी हूँ, लेखकगण, श्री सुबीर कुमार प्रधान, सुश्री लिसा, डा0 जॉय प्रिचार्ड एवं श्रीमती किम्बरले वेल्स तथा प्रकाशक, प्रॉक्टिकल एक्शन प्रकाशन का जिन्होंने अविलम्ब अनुमति के साथ इस पुस्तक का हिन्दी रुपान्तरण कार्य पूरा करने में आवश्यक सहयोग एवं प्रोत्साहन दिया।

इस पूरी प्रक्रिया में ब्रूक इण्डिया के सभी सहकर्मियों का विशेषकर श्री शीलरतन गुप्ता, श्री अनूप सिंह, श्री रत्नेश राव, श्री शशीकर, श्री संजय कुमार, श्री नवनीत, श्री मार्तण्ड सिंह, श्री राजेश शर्मा, श्री राम निवास, श्री पंकज गुप्ता, श्री तनु अग्रवाल, श्री मुराद अली, डा0 राकेश चित्तौरा, डा0 सौरभ सिंह एवं डा0 संजय आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। इसके लिये मेरी ओर से इन सभी को कोटिशः धन्यवाद।

अन्त में उन सभी लोगों को आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने किसी न किसी रुप में इस पुस्तक के सफल प्रकाशन में अपना योगदान दिया है।

यह पुस्तक आप सभी के लिये उपयोगी हो एवं समस्त हिन्दी भाषी क्षेत्र में सहभागी विकास प्रक्रियाओं के उपयोग हेतु इसे संदर्भपूर्ण बनाने के लिये हम चाहेंगे कि आप अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत करायेंगे।

इसी आशा, विश्वास एवं शुभकामनाओं सहित।

रमेश कुमार रंजन

आभार

हम उन सभी गदहे, घोड़े एवं खच्चर के मालिकों, प्रयोगकर्ताओं एवं देखभाल करने वालों को धन्यवाद देते हैं जिनके अनुभवों ने इस मार्गदर्शिका का आधार बनाया है। पशु आधारित आजीविका पर निर्भर समुदाय से प्रतिदिन अनुभवों की साझेदारी करने वाले एवं सीखने वाले विश्व स्तर पर ब्रुक के सभी साथी संस्थाओं के सहजकर्ताओं को उनके योगदान के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। विशेष रूप से रमेश रंजन, मुराद अली, एवं ब्रुक इण्डिया के समुदाय विकास टीम को धन्यवाद जिनके द्वारा क्षेत्र स्तर पर अश्व कल्याण हेतु किए जा रहे सहजीकरण के वास्तविक अनुभवों को यह मार्गदर्शिका प्रतिबिम्बित करती है।

हम सभी श्री अनिन्दों बनर्जी, तानिया डेनीसन एवं हेलेन (बेकी हे) के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस मार्गदर्शिका के आरंभिक (Writeshop) तैयारी में भाग लेकर काफी प्रशंसनीय कार्य किया है। हम सभी ब्रुक यू0के0 के समस्त कर्मचारीगण एवं आर्थिक सहयोगियों जिनने इस मार्गदशिका को प्रस्तुत करने में आर्थक सहयोग दिया है के साथ–साथ डारकस पेटट, डायरेक्टर अन्तर्राष्ट्रीय विकास, को उनके अन्तिम ड्राफ्ट पर टिप्पणी के लिए धन्यवाद।

इस मार्गदर्शिका को जीवन्त करने में मार्था हार्डी एवं अमिताभ पाण्डेय के खूबसूरत चित्रांकण को भूलाया नहीं जा सकता है।

अन्त में हम पूरे विश्व स्तर पर कहीं भी कार्य करने वाले काम काजी पशुओं को धन्यवाद देना चाहेंगे क्योंकि करोडों समाज, समुदाय एवं व्यक्तियों की आजीविका इन पर निर्भर है। हमें पूर्ण आशा है कि यह मार्गदर्शिका कामकाजी पशुओं के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में एक कदम बढकर उनका मदद करेगा।

लिसा वैन डिज्क, जॉय प्रिचर्ड, एस0 के0 प्रधान एवं किम्बरली वेल्स

अनुक्रमणिका

चित्र (Figures) IX
टेबल्स (Tables) X
केस स्टडी (Case Studies) X
सिद्धान्त/प्रक्रिया बॉक्सेस (Boxes) XI
चिन्ह जो प्रयोग किए गए हैं (Symbols used in the Text) XII
शब्द संक्षेप (Acronyms) XII
प्रस्तावना (Preface) XIII
पृष्ठभूमि XVI
कामकाजी पशु एवं उनका कल्याण XVII
कामकाजी पशुओं एवं उनके मालिकों का एक दूसरे पर निर्भरता लागत–लाभ एवं कल्याण की सोच XVII
पशु कल्याण में वृद्धि हेतु सामूहिक कार्य XIX

भाग–1
कामकाजी पशु एवं उनका कल्याण

अध्याय–1 कामकाजी पशु एवं उनसे सम्बंधित समुदाय **1**
कामकाजी पशु कौन है एवं वे क्या करते हैं 3
व्यक्ति या समुदाय कैसे कामकाजी पशुओं पर निर्भर हैं 5
कैसे कामकाजी पशु व्यक्ति या समुदाय पर निर्भर है 7
व्यक्तियों या समुदाय की जिन्दगी किस तरह पशुओं के रख–रखाव के तरीकों से प्रभावित होती है 9
अध्याय –2 पशु कल्याण **13**
पशु कल्याण क्या है 13
कामकाजी पशु के निरीक्षण का अभ्यास 14
कामकाजी पशुओं की आवश्यकता क्या है 15
पशु कैसा महसूस करता है 20
आप कैसे कह सकते हैं कि पशु अच्छा महसूस कर रहा है एवं वह क्या चाहता है 26
अच्छा और खराब कल्याण स्थिति की पहचान चिन्ह क्या है 30
समय व विभिन्न परिस्थितियों में कल्याण कैसे प्रभावित होता हैं 36
प्रतिदिन कामकाजी पशुओं के कल्याण को कौन जानता है एवं प्रभावित करता है 39

भाग–2
समुदायों के साथ पशु–कल्याण हस्तक्षेपों का क्रियान्वयन

अध्याय – 3 स्थायी परिवर्तन के लिए हस्तक्षेप **45**
किसी हस्तक्षेप को कौन सी बातें सफल बनाती हैं 45
कल्याण के नियामक 46
सफल एवं दीर्घकालिक कल्याण हस्तक्षेप के स्तम्भ 47

उत्प्रेरित एवं ज्ञानी मालिक, उपयोगकर्ता एवं देखभालकर्ता	48
एक मजबूत एवं सशक्त समूह का गठन	49
समुदाय द्वारा पशु कल्याण स्तर के अनुश्रवण के लिए संरचना	49
गुणी स्थानीय सेवा प्रदाता एवं गुणात्मक संसाधन की उपलब्धता	49
तय करना कहां किसके साथ काम करें : सर्वाधिक जरूरतमंद पशुओं को लक्ष्य करना	53
कैसे काम करें का निर्णय करना	57
अध्याय – 4 सामूहिक कार्य के लिए सहज करना	**59**
अवस्था – 1 नब्ज को महसूस करना	64
अवस्था – 2 सम्मिलित दृष्टि एवं सामूहिक सोच	77
अवस्था – 3 सहभागी पशु कल्याण आवश्यकताओं का आंकलन	81
अवस्था – 4 सामूहिक कार्ययोजना का निर्माण	93
अवस्था – 5 क्रिया और प्रतिक्रिया	103
अवस्था – 6 स्वयं मूल्यांकन और निरन्तर सहयोग से क्रमिक वापसी	109
अध्याय – 5 अश्व कल्याण की और बढ़ते कदम	125
अश्व कल्याण समूहों को संघ गठित करने की दिशा में सहयोग	127
समुदाय तक संदेश पहुँचने हेतु विभिन्न मंच अवसर	132

भाग–3

अश्व कल्याण के लिए सहभागी क्रियाशील टूल/तकनीक

1.	मानचित्रण	148
2.	गतिशीलता चित्रण	154
3.	चपाती चित्रण	157
4.	दैनिक गतिविधि	160
5.	जेन्डर गतिविधि विश्लेषण	164
6.	कार्य करने वाले पशुओं का मौसमी विश्लेषण	167
7.	ऐतिहासिक समय रेखा	170
8.	जोड़ावार रैकिंग तथा स्कोरिंग	172
9.	मैट्रिक्स रैकिंग तथा स्कोरिंग	176
10.	लिंग आधारित पहुँच एवं नियंत्रण विवरणिका	180
11.	रूझान विश्लेषण	182
12.	निर्भरता विश्लेषण	185
13.	शाख विश्लेषण	188
14.	समूह का आन्तरकि लेन–देन विश्लेषण	190
15.	लागत–लाभ विश्लेषण	193
16.	पशु कल्याण संबधित सांप–सीढ़ी का खेल	198
17.	यदि मैं घोड़ा होता	201
18.	मेरे पशु की कीमत कैसे बढ़े	206

19. पशु की भावना विश्लेषण 210
20. पशु की शारीरिक मानचित्रण 213
21. पशु रख रखाव विश्लेषण 216
22. पशु कल्याण भ्रमण 220
23. तीन पाइल कार्ड सार्टिंग 224
24. पशु कल्याण कहानी एक कमी के साथ 226
25. घोड़ों की समस्या 228
26. पशु कल्याण कारण और प्रभाव आंकलन 230
27. पशु आहार का विश्लेषण 232
28. ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना 237

सन्दर्भ एवं अन्य आवश्यक पाठ्य 241

चित्र

3.1 कार्यकारी पशुओं के कल्याण के नियामक 46
3.2 सफल एवं दीर्घकालिक कल्याण हस्तक्षेप के स्तम्भ 47
3.3 सेवा प्रदाता के प्रकार और प्रत्येक किस प्रकार पशु की आवश्यकता को पूरा करने में मदद करते हैं 50
3.4 जोखिम की स्थति वाले पशु समूह की पहचान 56
4.1 समुदाय में विभिन्न सामाजिक समूह तथा ऐच्छिक समूह 68
4.2 पशु एवं मनुष्यों के जरूरतों का संतुलन 80
4.3 सहभागी पशु कल्याण आवश्यकताओं का आंकलन 82
4.4 पशु को अच्छा रहने के लिए अच्छे संसाधनों एवं अच्छे काबू करने के तरीकों के साथ अच्छा रख–रखाव भी चाहिए 85
4.5 यदि मैं घोड़ा होता (टी17) 86
4.6 भौतिक और व्यवहारिक लक्षणों का उदाहरण 87
4.7 पशु आधारित सूचक, प्रबंधन व संसाधन संबंधी कल्याण सूचक 88
4.8 पशु कल्याण भ्रमण रिकार्डिंग चार्ट (टी 22) 91
4.9 सामुदायिक कार्ययोजना बनाने के दो संभावित प्रारूप 99
4.10 सामुदायिक कार्ययोजना का एक उदाहरण 101
4.11 क्रिया एवं प्रतिक्रिया चक्र 104
4.12 दुबारा किए गए पशु कल्याण भ्रमण को दर्शाता रिकार्डिंग चार्ट 107
4.13'अ' प्रत्येक पशुमालिक को प्रभावित करने वाले मुद्दे 114
4.13'ब' पूरे गांव/समूह को प्रभावित करने वाले मुद्दे 115
4.14'अ' अमर भट्ठे में पशु कल्याण आंकलन का प्रत्येक द्वारा विशलेषेण 118
4.14'ब' अमर भट्ठे में सम्पूर्ण पशु कल्याण आंकलन 119
5.1 प्रसार में कार्य करने वाले कार्यकर्ता हेतु सूचना पोस्टर का एक प्रारूप 138
टी 1'अ' पशु सेवा एवं संसाधन मानचित्रण, जिला सहारनपुर 149
टी 1'ब' पशु कल्याण चित्रण 151
टी 1'स' इन्फ्लुएन्जा बीमारी का चित्रण 152
टी 2 गतिशीलता चित्रण 156
टी 3 पशु आधारित सेवा प्रदाता व संसाधनों के साथ किया गया चपाती चित्रण 159
टी 4'अ' पशु रखने वाले समुदाय का एक दैनिक गतिविधि चित्रण, गाजियाबाद 162
टी 4'ब' पशु रखने वाले समुदाय का एक दैनिक गतिविधि चित्रण, मेरठ 163
टी 5 पशुओं के साथ किये जाने वाले कार्यों का जेन्डर गतिविधि विश्लेषण, गाजियाबाद 166
टी 6'अ' कार्य करने वाले पशुओं तथा उनके मालिकों का मौसमी चित्रण 168

टी 6'ब'	कार्य करने वाले पशुओं के बीमारियों का मौसमी चित्रण	169
टी 7	ऐतिहासिक समय रेखा	171
टी 8'अ'	पशु बीमारियों का जोड़ावार – रैंकिंग, मेरठ	174
टी 8'ब'	सेवादाताओं का जोड़ावार रैंकिंग, ग्राम अबूपुर	175
टी 9'अ'	नालबन्दों द्वारा दी जा रही सेवाओं का मैट्रिक्स स्कोरिंग	178
टी 9'ब'	पशु पालकों द्वारा 5 विभिन्न ऋण स्त्रोतों का 11 मानक चिन्हित कर, जोड़ावार तुलना	179
टी 10	लिंग आधारित पहुँच एवं नियंत्रण विवरणिका	181
टी 11'अ'	मिट्टी के वर्तन बनाने वाले समूह के चार पीढ़ियों में रूझान विश्लेषण	183
टी 11'ब'	पहले और बाद का विश्लेषण पशु पालकों द्वारा	184
टी 12	बिजौली ग्राम के सामुदायिक समूह के मध्य किये निर्भरता विश्लेषण का परिणाम	187
टी 13	मुजफ्फरनगर के सबतू गांव के पशु पालकों द्वारा आय–व्यय एवं ऋण विश्लेषण	189
टी 14	समूह का आन्तरिक लेन–देन का विश्लेषण	191
टी 15'अ'	लागत–लाभ विश्लेषण	195
टी 15'ब'	साबटू गांव में पशु संबंधी सेवाओं के दर को कम करने के लिए ग्राम स्तरीय कार्य योजना, जिला मुजफ्फरनगर, 2008	196
टी 16'अ'	प्रारम्भिक सांप–सीढ़ी का खेल खिलाड़ी पर्याप्त रूप से घूमते हुए	198
टी 16'बी'	पशु कल्याण संवेदनशीलता आधारित साँप और सीढ़ी का खेल	200
टी 17	''यदि मैं घोड़ा होता'' बुराना गांव मुजफ्फरनगर	205
टी 18'अ'	पशु की कीमत बढ़ाने के अभ्यास का विभिन्न चरन	207
टी 18'बी'	पशु की वर्तमान कीमत के आधार पर कल्याण की स्थिति का विश्लेषण	208
टी 18'सी'	कल्याण की स्थिति में सुधार के कारण पशु की कीमत में वृद्धि	209
टी 19	पशु भावनाओं का विश्लेषण	211
टी 20'अ'	पशु का शारीरिक चित्रण जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों को दर्शाया गया है	214
टी 20'ब'	पशु शरीर पर जख्म का चित्रण इसमें जख्म एवं उनके कारणों को दर्शाया गया है	215
टी 20'स'	शारीरिक चित्रण से पशु सबंधी मानकों को दर्शाना	215
टी 21'अ'	पशु कल्याण संबंधी अभ्यासों में गैप का विश्लेषण	218
टी 21'ब'	पशु कल्याण अभ्यास गैप विश्लेषण मैट्रिक्स	219
टी 22'अ'	पशु कल्याण भ्रमण रिकार्डिंग सीट ट्रैफिक सिगनल	222
टी 22'ब'	पशु कल्याण भ्रमण रिकार्डिंग सीट अंकों का उपयोग	223
टी 25	घोड़ों की समस्या आकृति	229
टी 26	पीठ पर जख्म के लिए पशु कल्याण कारण और प्रभाव रेखाचित्र, गाजियाबाद	231
टी 27'अ'	आहार विश्लेषण के चरण	234
टी 27'ब'	पशु मालिकों द्वारा कार्यकारी पशुओं के लिए निर्धारित की गई संतुलित आहार की मात्रा	235
टी 28	ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना : वर्तमान पशु इलाज अभ्यास की मैट्रिक्स	238

टेबल्स

4.1	कामकाजी पशुओं के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक कार्यक्रम की एक सम्पूर्ण रूपरेखा	60
4.2	प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 1 नब्ज को महसूस करना	65
4.3	प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 2 सम्मिलित दृष्टि एवं सामूहिक सोच	77
4.4	प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 3 सहभागी पशु कल्याण आवश्यकताओं का आंकलन	84
4.5	प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 4 सामूहिक कार्य योजना का निर्माण	95
4.6	प्रक्रिया परिदृश्य, अवस्था – 5 क्रिया एवं प्रतिक्रिया	105
4.7	अवस्था 6 का प्रक्रिया परिदृश्य – स्वयं मूल्यांकन और निरन्तर सहयोग से क्रमिक वापसी	110
5.1	अश्व कल्याण समूहों का संघ–गठन प्रक्रिया	125
T1	समुदाय को गतिशील बनाने की प्रक्रिया में पशु कल्याण हेतु सामुदायिक क्रियाशील टूलों के प्रयोग का दृष्टिकोण	144

केस स्टडी

A	मेरा गधा अब ज्यादा जीयेगा	42
B	पशु कल्याण में सुधार के मुख्य साझेदारों/हिस्सेदारों की सम्बद्धता	52
C	इथियोपिया में प्रायोगिक परियोजना के लिए सर्वाधिक जरूरतमंद पशुओं को परिभाषित करना	55
D	कामकाजी पशु के कल्याण स्तर में सुधार के लिए सामूहिक गतिविधि	61
E	पशु मालिक समुदाय में प्रवेश गतिविधियां	70
F	सहारनपुर ऋण और बचत समूह – कामकाजी पशुओं का कल्याण एवम् गरीब ग्रामीणों को सशक्त करते हुए	73
G	बुटाजीरा घोड़ा गाड़ी मालिक एसोशियन	75
H	खंजरपुर गांव	102
I	सहभागी कल्याण आवश्यकता आंकलन की पुनरावृन्ति और कारण प्रभाव द्वारा गंभीर मुद्दों का समाधान	118
J	बाह्य संस्था द्वारा "समूह के माध्यम से" दिए जा रहे नियमित सहयोग से/ 'वापसी" हेतु निर्धारित मानकों पर सहमति	122
K	गांव स्तर पर "अश्व कल्याण" पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन	129
L	गधों के कल्याण में सुधार हेतु रडियों के माध्यम से संदेशों का प्रचार–प्रसार	137
M	टिटनस टीकारण का लागत – लाभ विश्लेषण	197
N	मेरे काम करने वाले पशु की कीमत बढ़ी	208
O	ग्रामीण प्रतिनिधियों के साथ पशु आहार अभ्यास पर कार्यशाला	235
P	ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना	239

सिद्धान्त बक्से

1.	सशक्तिकरण की कुछ चुनौतियां	XXIII
2.	पशु कल्याण को बढ़ावा देने के लिए उत्प्रेरण	XXIV
3.	कार्य करने वाले पशु के कल्याण के लिए जरूरतें	16
4.	शिकार जाति पशु की ज्ञानेन्द्रियाँ	24
5.	पशु की भाषा में समझना – अनचाहा व्यवहार	30
6.	पशु कल्याण	35
7.	आवर्ती परिवर्तन	45
8.	सेवा प्रदाताओं तक पहुंच, उपलब्धता, क्रय योग्यता स्वीकार्यता एवं गुणवत्ता	51
9.	महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक	117
10.	गांव से वापसी हेतु निर्धारित मानक	123
11.	संघ के अच्छे सदस्य बनाने हेतु आवश्यक शर्तें	128
12.	अश्व कल्याण में सुधार हेतु प्रभावी संप्रेषण	139

प्रक्रिया बक्से

1.	स्थायित्त्व चित्रण	48
2.	कल्याण के लिए जोखिमों के वर्गों को पहचानने के लिए टारगेटिंग अभ्यास	55
3.	एक स्थानीय समुदाय के समूह का सघन विश्लेषण – एक वर्ष बाद की स्थिति	74
4.	पशु की आवश्यकतायें एवं मानवीय आवश्यकतायें	80
5.	ऐसे मुद्दों के लिए हम क्या कर सकते हैं जिनका हल संभव नहीं है	96
6.	एक अच्छा क्रिया एवं प्रतिक्रिया	108
7.	अश्वमित्र/अश्व प्रेमी	121
8.	समुदाय तक पहुँच बनाने हेतु महत्वपूर्ण सिद्धान्त	130
9.	पी0 आर0 ए0 टूल्स के प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण सुझाव	147
10.	ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना बनाने की तकनीक	238

चिन्ह जो प्रयोग किए गए

	सिद्धान्त बक्सा सिद्धान्त बक्से में आप उस निश्चित प्राग्राफ या अध्याय में प्रयोग किए गए सिद्धान्त के बारे में कुछ सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पायेंगे।
	प्रक्रिया बक्सा प्रक्रिया बक्सा पाठ्य में आए मुद्दों मुख्य बिन्दुओं या पायदानों को और अधिक विस्तारित करते हुए समझाता है।
	केस अध्ययन बक्सा केस अध्ययन बक्से में आपको पाठ्य में विवरित प्रक्रिया का जमीनी स्तर पर किए कार्यों का उदाहरण मिलेगा। इन केस अध्ययनों में आपको सहजकर्ता द्वारा कामकाजी पशुओं के कल्याण अथवा खुशहाली को विकसित करने के लिए तथा पशु पालकों को क्रियाशील करने के लिए अपनाए गए प्रक्रियाओं के तह तक जाने में मदद करेगा।
	चेतावनी बक्सा अध्याय–4 में एक चेतावनी बक्सा है। अगर आप इसे देखते हैं तो कृपा कर इसको ध्यान में रखें।

शब्द संक्षेप **(Acronyms)**

AAAAQ : Accesibility- Availability-Affordability-Acceptability-Quality
पहुंच उपलब्धता क्रययोग्यता स्वीकार्यता गुणवत्ता

APA : Appreciative Planning and Action
प्रशंसा करते हुए योजना निर्माण एवं कार्य आरंभ

CBAHW : Community- based animal health workers
सामुदाय आधारित पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता

PLA : Participatory learning and action
सहभागी सीख एवं कार्य आरंभ

PRA: Participatory rural appraisal
सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन

PWNA: Participatory welfare need assessment
सहभागी कल्याण आवश्यकता का आंकलन

SHGs: Self- help groups
स्वंय सहायता समूह

प्रस्तावना

हमने इस मार्गदर्शिका को क्यों लिखा है?

काफी लोगों को सामूहिक क्रियाशीलता एवं सामुदायिक सहजीकरण का ज्ञान है। अन्य काफी लोगों को कार्यकारी पशुओ एवं उनके कल्याण की जानकारी है। पहली बार सामुदायिक सहजीकरण एवं कामकाजी पशुओं का कल्याण दोनों ही ज्ञान के क्षेत्र को इस मार्गदर्शिका में एक साथ सामुदायिक सहजकर्ताओं के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। कामकाजी पशुओं के लम्बे समय तक सतत् कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक क्रियाविधियों (गतिविधियों) को उत्प्रेरित करने वाले चरणों एवं प्रायोगिक टूल्स व तकनीकों को यह मार्गदर्शिका व्याख्यायित करती है।

इस मार्गदर्शिका में वर्णित टूल्स एवं तकनीकों को कामकाजी अश्वों, खच्चरों एवं गदहों के मालिकों के साथ विकसित किया गया है एवं उन्हीं के साथ इनका परीक्षण भी किया गया है। ये तकनीक पशु मालिकों के प्रतिदिन के प्रयोग में लाई जाती है। अश्व प्रजाति के अतिरिक्त पशुओं पर आधारित जीवन यापन करने वाले पशु मालिक समुदाय के लिए भी ये तकनीक समान रूप से लागू होती है। (जैसे – बैल, भैंसा, ऊंट आदि) क्योंकि उनका कार्य करने का वातावरण कामकाजी अश्व प्रजाति के समान ही है। हमारा विश्वास है कि ये तकनीक फार्म पशुधन के कल्याण को बढावा देने में भी प्रयोग का जा सकती है साथ ही उम्मीद है कि इस मार्गदर्शिका को पढ़ने वाले कुछ उत्प्रेरक इन तकनीकों को इस कार्य के लिए और विकसित कर आगे बढ़ायेंगे।

इस मार्गदर्शिका का प्रयोग कौन कर सकता है ?

यह मार्गदर्शिका सामुदायिक सहजकर्ता एवं ऐसे लोग जो कामकाजी पशुओ एवं उनके मालिकों के साथ सीधे जुडे हुए हैं के लिए लिखा गया है। इनके अलावा इस मार्गदर्शिका का प्रयोग पशु चिकित्सक, समुदाय आधारित पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता, प्रसार कार्यकर्ता एवं विकास कार्यकर्ता भी कर सकते हैं।

यह मार्गदर्शिका मानती है कि सामुदायिक सहजकर्ता के रूप में आपके पास निम्न ज्ञान, कौशल एवं मनोवृति है:–

- समुदाय को गतिशील करने का आधारीय कौशल। जैसे–
    - सम्बन्ध स्थापित करना
    - लोगों को व्यवस्थित करते हुए उन्हें संस्थागत ढांचे में डालना
    - सुनने की क्षमता
    - सामुदायिक समूहों के कार्य करने की पद्धति की समझ
    - स्थानीय भाषा एवं स्थिति की समझ
- किसी भी प्रकार के लाभ के लिए सामुदायिक क्रियाविधि को उत्प्रेरित करने हेतु पी0आर0ए0 टूल्स अथवा इसी तरह के अन्य टूल्स को प्रयोग करने का प्रशिक्षण एवं क्षमता।
- समुदाय को सशक्त करने एवं परियोजना को अपनाने की ललक।
- पशु के प्रति लगाव एवं शान्त मनोवृत्ति
- पशु रख–रखाव का आधारित ज्ञान महत्वपूर्ण है लेकिन आवश्यक नहीं है

इस मार्गदर्शिका का प्रयोग कैसे करें:–

इस मार्गदर्शिका में तीन भाग हैं:–

- कामकाजी पशु एवं उनका कल्याण
- सतत् परिवर्तन के लिए पहल
- सहजकर्ताओं हेतु टूलकिट

यह मार्गदर्शिका कई तरह से प्रयोग को जा सकती है। अगर आप एक सामुदायिक सहजकर्ता हैं एवं पहली बार पशुओं के लिए काम कर रहे हैं तो हमारा सुझाव है कि आप पूरे मार्गदर्शिका को पूरा पढ़ें। इसके बाद आप अपने अनुभवों एवं विवेक का प्रयोग करते हुए अपने प्रोग्राम को सहज करने के लिए एवं उनकी रूपरेखा बनाने हेतु चरणों एवं तकनीकों का प्रयोग करें।

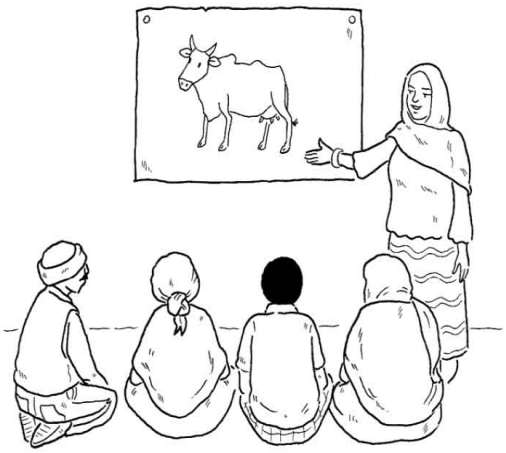

अगर आप कृषि अथवा पशु स्वास्थ्य पृष्ठभूमि के अनुभवी सामुदायिक सहजकर्ता हैं तो हमारा सुझाव है कि आप भाग–1 को पढ़कर पशु उत्पादकता एवं आवश्यकता के साथ–साथ पशु कल्याण की समझ विकसित करें। यह भाग कामकाजी पशु एवं पशुधन के बीच के अन्तर को भी वर्णित करता है। उसके बाद बाद आप भाग–3 को पढ़ें जो टूलकिट है एवं वहां से कुछ विशेष पशु कल्याणकारी टूल को चुनकर अपने वर्तमान गतिविधियों में शामिल करें। अगर आप एक पशु चिकित्सक, पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता या पशु प्रसार कार्यकर्ता हैं एवं पशुओं की बीमारियों एवं खराब स्वास्थ्य के रख–रखाव एवं प्रबंधन में सतत्ता लाकर ठीक करना चाहते हैं तो आप इस मार्गदर्शिका को उलट–पलट कर यह देखें कि आपके कार्यों के अनुरूप कौन सा भाग या अध्याय है। फिर इन भागों एवं अध्यायों का गहराई से अध्ययन करें। अगर आपको अभी तक सामुदायिक सहजीकरण की विधियों जो मार्गदर्शिका में वर्णित हैं में महारत हासिल नहीं है तो आप इस सम्बंध में पहले प्रशिक्षण या सलाह प्राप्त करें उसके बाद ही इस तरह के कार्यक्रम को संचालित करें।

इस मार्गदर्शिका के प्रयोग के समय अपेक्षाएं

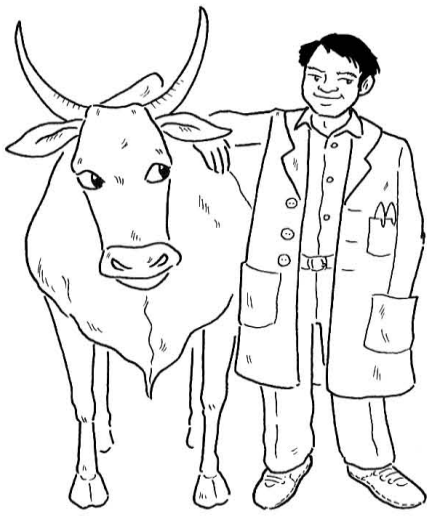

''बोझ की साझेदारी'' नामक यह मार्गदर्शिका अनुभवी सहजकर्ताओं, पशु चिकित्सकों एवं पशु कल्याण से सम्बंधित वैज्ञानिक जो इस क्षेत्र में कई सालों से कार्य करते हुए गलतियां भी कर रहे हैं, समुदाय से सीख रहे हैं एवं अपने विचारों को लगातार समय के साथ बढा भी रहे हैं द्वारा लिखी गई है। यह मार्गदर्शिका कई ऐसे लोगों के समूहों के साथ विकसित की गई है जो जिन्दगी के महत्वपूर्ण भागों के आजीविका हेतु कामकाजी पशुओं का इस्तेमाल करते हैं। जिन्होंने इन तकनीकों का परीक्षण किया एवं अपनाया वैसा समुदाय इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है साथ ही उन्होंने कदम कदम पर हमें सिखाया कि उनके लिए क्या अच्छा है एवं क्या नहीं।

इस मार्गदर्शिका का प्रयोग सामूहिक गतिविधियों को सतत् पशु कल्याणार्थ उत्प्रेरित करने में सफलता की जिम्मेदारी नही लेती है। सामूहिक गतिविधियों को सहभागी विधियों से उत्प्रेरित करने का कार्य समुदाय एवं उनके पशुओं की इच्छाओं, आवश्यकताओं, चाहतों एवं भावनाओं को अपनाते हुए इस मार्गदर्शिका में आए ज्ञान का प्रयोग करते हुए भी समय, कौशल, अनुभव एवं स्वयं के धैर्य पर आधारित है।

यह मार्गदर्शिका सहजकर्ताओं एवं दानकर्ता संस्थाओं से समुदाय में परिवर्तन के माहौल का निर्माण भी चाहती है। इस सम्बंध में और अधिक जानकारी सत्त परिवर्तन हेतु पहल नामक अध्याय में मिलती है। यह मार्गदर्शिका आपदा एवं विवाद की स्थिति में उपयुक्त नहीं है क्योंकि ऐसी स्थिति में प्रभावी सामुदायिक सहभागिता के लिए आवश्यक समय एवं माहौल का अभाव होता है। आकस्मिक स्थिति में पशु कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए इस मार्गदर्शिका के अन्त में दिए गए संदर्भों की सूची को अवश्य देखें।

लम्बे समय तक पशुओं की सफलता के लिए आपका समर्पण अति महत्वपूर्ण है क्योंकि पशु अपने आपके लिए एवं उन पर निर्भर समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है।

पृष्ठभूमि

पशु कल्याण को विकसित करने के लिए सामूहिक प्रयासों को पशु मालिक समुदाय में बढावा देते हुए बोझ की साझेदारी ऐसे लाखों करोड़ों पशुओं के जिन्दगी को बेहतर करने के लिए समर्पित है जो गाडी, तांगा, बुग्गी, बग्गी खीचने, खेत जोतने, पीठ या कमर पर बोझा ढोने आदि कार्यों में सलंग्न है। इस तरह का काम करने में पशु आधारित जीवन यापन करने वालों की आजीविका एवं पशु से लगाव में भी वृद्धि होगी। इस प्रक्रिया में सामुदायिक सहजकर्ता (उत्प्रेरक, प्रसार कार्यकर्ता, परिवर्तन कार्यकर्ता) एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो समुदाय को क्रियाशील करने हेतु उपयुक्त वातावरण को या तो बनाता है या बनाने में मदद करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों ने सामुदायिक विकास एवं परिवर्तन की गतिविधियों को सहज करने के लिए प्रक्रियाओं, तरीकों एवं तकनीकों को विकसित किया है। मगर ये तरीके, प्रक्रियाएं एवं तकनीकें, स्वास्थ्य, जल प्रबन्धन, साफ–सफाई, कृषि आदि जैसे क्षेत्र तक ही सीमित हैं। कामकाजी पशुओं के कल्याण को सुनिश्चित करने के कार्यक्रम में हमने पाया कि पशु कल्याण को समझने एवं इसमें परिवर्तन लाने हेतु क्षेत्र आधारित तरीकों एवं तकनीकों का काफी अभाव है।

व्यक्तियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है जब उस कार्य से उनका या उनके परिवार का सीधा संबंध न होकर किसी तीसरे (पशुओं) का संबंध होता है।

पशु एवं पशु समुदाय के लम्बे समय तक लाभ के लिए अल्पकालिक प्रयास, समय, धन एवं उत्पादकता की जरूरत होती है। इसके साथ ही यह जानना अत्यन्त कठिन है कि मूक होने के कारण पशु अपने कल्याण को परिभाषित करेगा। अगर पशु अपने कल्याण के बारे में तथा अपनी पसंद–नापंसद कहने के काबिल होता तो यह कार्य बिल्कुल आसान हो जाता। पशु मालिक समुदाय के साथ वर्तमान में उपलब्ध प्रकियाओं के प्रयोग में सहजकर्ताओं को काफी कठिनाई महसूस होती है क्योंकि पूरी जानकारी होने के बाद भी सहजकर्ता इन समुदायों के वास्तविकताओं से परिचित नहीं होते हैं। यही कारण है कि इस मार्गदर्शिका को लिखने का विचार पनपा।

कामकाजी पशु एवं उनका कल्याण

कामकाजी पशुओं का कल्याण सुनिश्चित करना अन्य पशुओं की तुलना में काफी जटिल है। जैसे कि फार्म पशु अपनी आवश्यकताओं (भोजन, आवास एवं अन्य रख–रखाव आदि) के लिए अपने मालिकों अथवा देखभाल करने वालों पर पूर्णतः निर्भर है। ढ़ोर, भेड़, सुअर, मुर्गी के लिए यह थोड़ा सा भिन्न है क्योंकि वे अकेले या झुण्ड में रखे जाते हैं जहां उन्हें आपस में एक दूसरे से मिलने –जुलने का एक सीमा तक छूट रहती है।

माल ढ़ोने वाले एवं परिवहन में प्रयोग होने वाले पशुओं को कई विविध परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जिसमें हिमालय की चोटियों पर जहां कोई मोटर गाड़ी नहीं जा सकती, पीठ पर बोझा ले जाना, से लेकर अफ्रीका में खेतों की जुताई, निराई एवं गुड़ाई तक ही नहीं बल्कि विश्व के बड़े–बड़े भीड़ वाले शहरों में भी बोझे का ढ़ोना भी शामिल है।

इन कामकाजी पशुओं के कुछ कार्य निम्न हैं।

- पानी खींचकर उसे वितरित करना
- नदियों से रेत बाहर लाना
- खदानों से खनिजों को बाहर लाना
- घर बनाने के लिए ईंट एवं धातुओं की ढुलाई
- पौधों से अनाज/दाने को अलग करना
- बाजार को माल पहुंचाना
- पर्यटकों को घूमाना
- विस्थापितों (Refugees) को एक जगह से दूसरे जगह ले जाना
- बीमार को अस्पताल ले जाना
- शादी–ब्याह अथवा अन्य उत्सवों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना, आदि–आदि

अपने कई तरह की जिम्मेदारियों के बोझ को निभाते हुए कामकाजी पशु कई तरह के शारीरिक एवं मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाते हैं ये पशु अत्यधिक गर्मी, सर्दी के साथ साथ वर्षा एवं सूखे जैसे वातावरणीय परिवर्तन के भी शिकार होते हैं। कठिन से कठिन रास्तों पर भी उन्हें भारी एवं असंतुलित बोझे को लेकर चलना पड़ता है। ये पशु अपने मालिको के साथ उनके सामान ही अपने जिन्दगी में कठिनाइयों का सामना करते हैं।

कामकाजी पशु एवं उनके मालिकों की एक दूसरे पर निर्भरताः–

लागत–लाभ एवं कल्याण की सोच

कामकाजी पशु एवं उन पर आजीविका हेतु निर्भर उनके मालिकों के बीच आपस में एक दूसरे पर निर्भरता का एक मजबूत बंधन है। संसार के सभी भागों में अपने पशुओं की महत्वता एवं उनके मूल्यों की कहानी सुनाते हुए लोग आपको मिल जायेंगे। इन कहानियो में आपको दिखेगा कि कामकाजी घोडे, गधे, बैल एवं ऊंट हमेशा अच्छे तरह से रखे जाते हैं एवं उनकी प्रशंसा की जाती है, उन लोगों के द्वारा जो इनके साथ काम करते है एवं उनके समाज द्वारा दुर्भाग्यवश कामकाजी पशुओं का कल्याण कुछ किस्से कहानी में आए वृतान्त से अलग है।

पशु रखने वाले समुदाय को अपने परिवार तथा पशुओं के लिए कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे–गरीबी, निम्न सामाजिक स्तर एवं संसाधनों तक सीमित पहुंच। अन्य समुदायों की तुलना में पशु मालिक समुदाय को अपने आजीविका को बढ़ाने के बहुत कम अवसर होते हैं साथ ही अपने स्वंय के स्वास्थ्य अथवा बच्चों की पढ़ाई के ऊपर पशुओं की सुख – समृद्धि को प्राथमिकता देने का कोई विकल्प नहीं होता है। पशु प्रभावित में भी कामकाजी पशु को बचे हुए भोजन अथवा संसाधनों में सबसे अन्तिम हिस्सा मिलता है क्योंकि उनकी उत्पादकता सीधे बाजार योग्य उत्पाद, जैसे मांस या दूध के मुकाबले जल्दी नजर में आने वाला नहीं होता है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए पशु मालिकों एवं पशु मालिक समुदाय की सामूहिक इच्छाओं को कामकाजी पशुओं की तरफ बढाने तथा इन इच्छाओं को पशु कल्याण हेतु अनुवादित करने के लिए यह मार्गदर्शिका तकनीकों एवं तरीकों का सुझाव देती है। परिणामस्वरूप यह उम्मीद की जाती है कि लोग अपने कार्य एवं स्वंय के अनुरूप गतिविधियों को तय करते हुए यह फैसला लेंगे कि कहां कब और कैसे इन गतिविधियों पर कार्य किया जाये। ऐसे समय में जब पशु मालिक अन्य कई समस्याओं से जूझ रहे हों, उनसे एक सहजकर्ता के रूप में आपको काफी गरमा – गरम बहस अथवा विरोध का सामना करना पड सकता है। सहमत हुए परिवर्तन के चरन हमेशा छोटे–छोटे होते हैं न कि बहुत बड़ा छलांग वाला। हमने अपने कार्य में पाया है कि प्रत्येक समुदाय के पास कोई न कोई चुनौती है।

पशु कल्याण बेहतरी के लिए सामूहिक कार्य

सामूहिक कार्य क्या है?

सामूहिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह में कार्य करना ही सामूहिक कार्य का अर्थ है। यहां पशु कल्याण के सन्दर्भ में सामूहिक लक्ष्य कामकाजी पशुओं के कल्याण को बढ़ावा देना है।

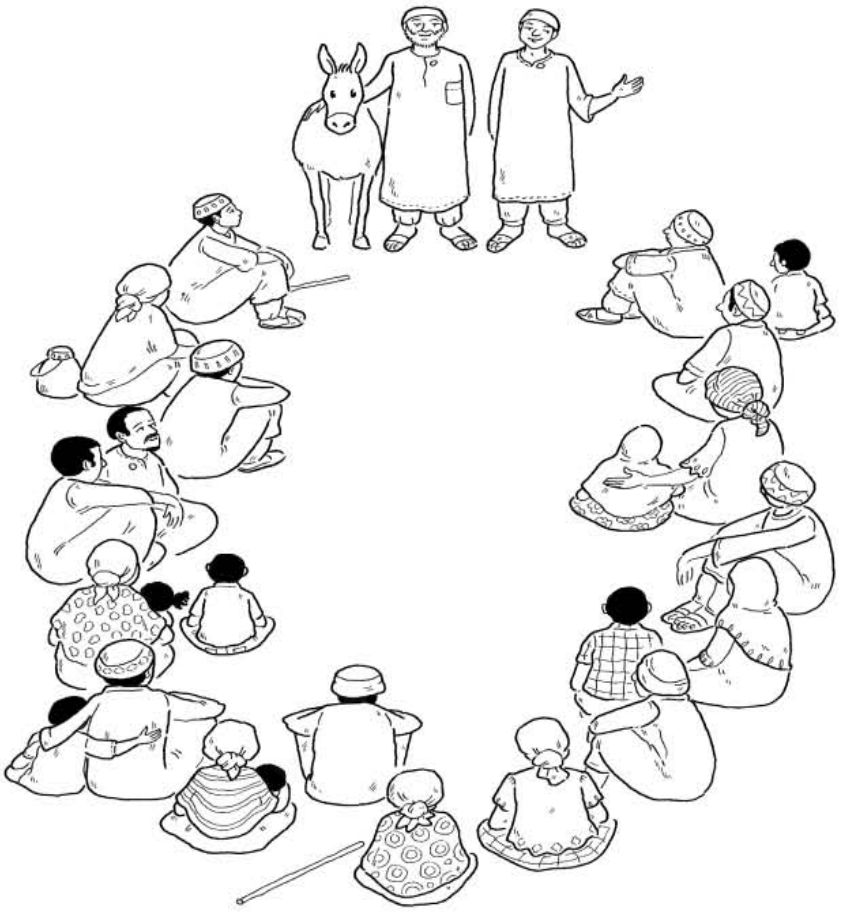

पशु कल्याण में परिवर्तन लाने के लिए सामूहिक गतिविधियां क्यों आवश्यक हैं ?

समुदाय विकास के अनुभवों को देखने पर यह पता चलता है कि किसी भी गतिविधि को लागू करने एवं इसका स्वामित्व समुदाय द्वारा लेने की दो महत्वपूर्ण शर्तें हैं जिससे कि वह गतिविधि सहजीकरण के बाद भी चलती रहती है। वे शर्तें निम्न हैं:

- पशु कल्याण को विस्तारित करने के लिए उच्च स्तर पर प्रोत्साहित एवं उत्प्रेरित समुदाय।
- लंबे समय तक की गई प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करने तथा उनके रख–रखाव के लिए प्रभावी सामुदायिक संगठन।

इन दोनों के बिना बाहरी सहयोग से कल्याण को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों को समुदाय के द्वारा चलाते रहने की कम उम्मीद होती है। बाहरी उत्प्रेरण से चल रहे कार्यक्रम प्रायः उस समय असफल हो जाते है जब बाहरी उत्प्रेरण या तो बंद कर दिया जाता है या वापस लिया जाता है।

सफलता का आधार सहभागिता है अतः शुरूआत से ही इनके शर्तो को लागू करना आवश्यक हो जाता है।

समुदाय आधारित सहभागी तरीकों के लाभ

समुदाय आधारित सहभागी तरीकों के कई लाभ हैं।

ज्ञान के स्तर पर

- अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव बताता है कि स्थानीय ज्ञान एवं बुद्धिमता विकास प्रक्रियाओं के सफलता में अहम भूमिका रखती है।
- सहभागी सीखने एवं लोगों को क्रियाशील करने के तरीके समुदाय की क्षमताओं को अपने ही पशुओं की आवश्यकताओं को पहचानने, कल्याण हेतु उद्देश्य को तय करने, योजना बनाने, क्रियान्वित करने, अनुश्रवित करने तथा किए गए कार्यों की समीक्षा एवं परिणाम को जानने में उत्साहित करते हुए मदद करती है एवं समुदाय को मानसिक रूप से मजबूत भी करती है।
- सहभागी प्रक्रिया स्थानीय समुदाय को अमूल्य अनुभव एवं कौशल, पशु के रख–रखाव एवं काबू करने के तरीकों में प्रदान करती है जिसे वह दूसरों के साथ भी साझेदारी करती है।
- सहभागी पद्धति में परंपरागत हानिकारक बुद्धिमता को सवाल किया जाता है जबकि पशुओं को लाभ पहुंचाने वाली बुद्धिमता को संरक्षित एवं फिर से जीवित किया जाता है।
- एक समान समस्याओं के लिए समुदाय द्वारा किए गए प्रयासों के विभिन्न तरह से ढूँढे गए उदाहरणों को देखने पर, विश्लेषित करने के लिए समुदाय को उत्साहित किया जाता है ताकि अपने बीच में ही मौजूद तरीकों को वे आसानी से देख सकें एवं अपना सकें।

आत्म निर्भरता

- सहयोगी संस्था या चेरिटी द्वारा मुफ्त सेवा या कम कीमत पर सेवा के द्वारा निर्भर बनाए गए सामाजिक तंत्रों को अपनी निर्भरता खत्म करने एवं आत्मनिर्भर बनाने मे सहभागी प्रक्रिया मदद करती है।
- सामुदायिक सहभागिता पशु कल्याण के मुद्दों के प्रति सजगता एवं परिवर्तन के प्रति आत्मविश्वास लाने का काम करती है।
- सहभागिता एक ऐसी शक्ति को जन्म या विकसित कर सकती है जो समुदाय को आपस में जोड़ते हुए पशुओं के लिए सामूहिक गतिविधियों की जिम्मेदारी लेने हेतु सहमत एवं उत्साहित करती है।

- लघु सीमान्त एवं सुविधाहीन पशु मालिक भी अपनी क्षमताओं को विकसित कर अपने पशुओं की जांच करते हुए समस्याओं को ढूँढ़कर उनके समाधान को सामूहिक रूप से खोजता व निकालता है।
- संसाधनों का समुचित उपभोग एवं प्रक्रियाओं को प्रभावी बनाने में सामुदायिक सहभागिता काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- अब तक सोचे गए विचारों को समायोजित करने एवं कार्यक्रम के विस्तार के गुंजाइश को सहभागिता सुनिश्चित करती है।
- बाहरी संस्थाओं में उपलब्ध गतिविधियों की अपनाकर समुदाय सतत्ता को हासिल करता है। जब बाहरी सहयोग हटा लिया जाता है उस समय ये प्रक्रियाओं स्थानीय प्रबंधन तंत्र की स्थापना करता है जो बाहरी सहयोग से स्थापित गतिविधियों की देखभाल करते हुए बरकरार रहता है।
- सहभागी प्रक्रिया छोटे–छोटे समूहों के जाल को संघ या महासंघ में परिवर्तित करते हुए समुदाय एवं समुदाय के बाहर आपसी सहयोग की भावना को उत्पन्न करता है जो बदलाव लाता है एवं बदलाव को बरकरार रखता है।

किस तरह से सामूहिक क्रियाविधि शुरू करके बरकरार रखा जाता है?

कामकाजी पशुओं को देखभाल करने वालों, इन्हें काबू में करने वालों तथा इनके मालिकों के लिए पशु कल्याण एक अपरिचित मुद्दा है। शुरू में इन लोगों को इस मुद्दे पर केन्द्रित करना एक कठिन कार्य हो सकता है। ये लोग अपनी दैनिक चर्चा में कई अच्छे कल्याण सम्बंधी अभ्यास पशु रख–रखाव में करते रहते हैं लेकिन इन अभ्यासों को वे ''कल्याण'' का दर्जा नहीं दे पाते हैं क्योंकि कल्याण एक ऐसा शब्द है जिसे आसानी से परिभाषित कर पाना एक कठिन कार्य है। एक सहजकर्ता के रूप में आपकी पहली पाथमिकता कामकाजी पशुओं के कल्याण सम्बंधी ऐसे मुख्य समस्याओं को पहचानना होगा जिन पर समुदाय कार्य करने को इच्छुक है। इसके साथ ही एक सामूहिक लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए समुदाय को संगठित करना होगा। समुदाय तभी उत्प्रेरित होकर किसी कार्य को करना शुरू करता है जब वे स्वयं अपने समस्याओं का अहसास करते हुए इन्हें पहचानते है एवं उसके बाद आपस में विचार विमर्श करते हुए स्वयं एवं पशु दोनों के लिए चाही गई बेहतर परिस्थितियों हेतु सामूहिक सोच को विकसित कर योजना का निर्माण करते हैं।

कामकाजी पशुओं के मालिकों के पास कई तरह के आजीविका के साधन हैं। समुदाय या परिवार के अलग–अलग सदस्य कार्य के समय में एवं घर पर प्रायः पशुओं के प्रबंधन में लगे रहते हैं। अगर पशु मालिकों, पशु प्रयोगकर्ताओं एवं पशुओं के रख–रखाव करने वालों के अनुभवों या चाहतों को मिलाने की कोशिश की जायेगी तो कभी भी एक मजबूत समूह नहीं बन पायेगा। इन परिस्थितयों में एक समान विचारधारा वाले लोगों का छोटा समूह बनाने से एक प्रभावी समूह का निर्माण होता है। ये छोटे–छोटे समूह बाद में निर्णय लेते हैं कि कैसे अन्य समूहों को मिलाते हुए एक बड़े समूह या संघ अथवा संस्था का निर्माण करें जो सामूहिक मुद्दों पर आसानी से काम करे। इस तरह से परिवर्तन लाने इसे बरकरार रखने में सहभागी पद्धति समुदाय की सहमति को बढ़ाता है।

कई चरणों एवं स्तरों का अनुसरण किया जाता है इन विभिन्न स्तरों एवं चरणों का प्रयोग एक निश्चित दिशा–निर्देश नहीं है बल्कि यह मात्र एक मार्गदर्शिका है जिनका चुनाव स्थानीय परिस्थितियों, समुदाय के साथ आपका सम्बंध एवं समुदाय द्वारा चुनौतियों के प्रति प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करता है। इस मागदर्शिका में वर्णित चरणों के क्रम को जैसा है वैसा ही लेने से यह आवश्यक नहीं कि यह योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन को विश्लेषित करेगा। यहां महत्वपूर्ण बात है कि हमेशा समुदाय की चाहतों एवं इच्छाओं को आप अपने पशु कल्याण के एजेण्डों से पहले तरजीह दें। प्रकियाओं के बाद के चरणों में इसे और भी मजबूती मिलती जाती है।

सामूहिक चाहत के विषय या मुद्दे पर आरंभिक विचार–विमर्श के उपरान्त सहभागी सीख एवं प्रतिक्रिया से सामुदायिक समूह अपना स्वंय का तंत्र, नियमावली एवं संचालन के तरीकों को विकसित करेगा। ये नियमावली एवं संचालन का तंत्र समुदाय के अन्दर स्थानीय वातावरण के अनुरूप प्रभावी सामूहिक क्रियाविधि की ओर ले जाते हुए समूहों को सतत् पशु कल्याण के पहल को लम्बे समय तक चलाने के लिए समर्थन करेगा। अच्छी तरह से संगठित समूह सहयोगी संस्था की वापसी के बाद भी नियमित एवं सुचारू रूप से कार्य करते हुए एक मजबूत एवं स्थायी संस्थागत आधार बनाते हैं जो समुदाय एवं पशुओं के जरूरतों को पूरा करता रहता है।

पशु रखने वाले समुदाय को सशक्त करनाः–

इस मार्गदर्शिका के सन्दर्भ में सशक्तिकरण का अर्थ समुदाय (पशु रखने वाले परिवार एवं सेवा प्रदाता) को इस काबिल बनाना है कि वे अपने वर्तमान परिस्थितियों के सच्चाई को जान व पहचान कर, अपने पशुओं के कमजोर कल्याण स्थिति के कारकों के लिए प्रतिक्रिया करते हुए ऐसे चरनों का चुनाव करें जो परिस्थितियों को बदल सके। समुदाय कहां जाना चाहता हैं एवं वर्तमान में कहां है को विश्लेषित करते हुए अपना लक्ष्य तय करता है एवं उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योजना का निर्माण करता हैं, जो उनके स्वालम्बन एवं आपसी ताकतों एवं मजबूतियों के साझेदारी पर आधारित होता है। यहाँ यह सबसे महत्वपूर्ण है कि ये प्रक्रियाएं दूसरों पर आश्रित रहने की मानसिकता को तोड़ता है एवं समुदाय अपना स्वंय के रास्ते को चिन्हित करने की शक्ति को प्राप्त करता है।

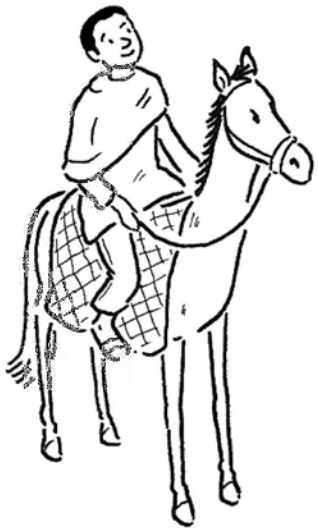

सशक्त स्थानीय समूह अपनी समस्याओं को विश्लेषित करते हुए अपने ज्ञान, अनुभव एवं समझ के आधार पर इन समस्याओं का हर सभावित समाधानों पर विचार करता है। समुदाय सहयोगी संस्था या आपके द्वारा बताए गए विकल्पों की परीक्षा लेते हुए यह तय करता है कि कौन सा विकल्प सबसे अधिक उचित है, उनका स्वंय का अथवा आप द्वारा बताया हुआ।

एक सहजकर्ता के रूप में आपकी भूमिका समुदाय को विभिन्न सहभागी तरीकों एवं प्रक्रियाओं से अवगत कराना है ताकि इन तकनीकों एवं प्रक्रियाओं की मदद् से समुदाय अपने मुद्दों को पहचान सकें, उन मुद्दों का प्राथमिकीकरण कर सकें एवं इन मुद्दों के लिए जिम्मेदार कारणों को दूर करने के उपायों पर चर्चा करते हुए इन्हें दूर करने के लिए क्रियाशील हो जाऐ। समूह सहजकर्ताओं के लिए एक विशेष कौशल की आवश्यकता होती है जिनमें

- सहभागी पद्धतियों की साफ एवं सुन्दर समझ
- सामुदायिक संगठन की क्षमता
- सुनने एवं समझने की इच्छा एवं दूसरों के साथ सहयोगी के रूप में मित्रवत कार्य करने का व्यवहार आदि शामिल है।

सिद्धान्त बॉक्स 1 सशक्तिकरण की कुछ चुनौतियां

- पशु रखने वाले समुदाय को स्वयं की बहुत सारी परेशानियां होती है। सहयोगी संस्थाओं की दृष्टि, कार्यक्रम या लक्ष्य कई बार समुदाय द्वारा महत्वपूर्णता की दर्जा नहीं प्राप्त कर पाता है साथ ही कई बार यह उनके परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त भी नहीं होता है।
- सहभागिता किसी भी परियोजना में एक बार की गतिविधियां नहीं है बल्कि यह एक प्रकिया है जो समय के साथ विकसित होती है एवं इसकी दिशा तथा उत्पादन को मापना या अनुमान लगाना या प्रबंधित करना एक कठिन कार्य होता है।
- सहभागी सीखने की प्रक्रिया समुदाय को अपने अहम् परेशानियों एवं मुददों को प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है। यहां परेशानियों या मुददों को विश्लेषण से संभावित समाधान की ओर ले जाने का सिद्धान्त काम करता है। यह सुनने में काफी आसान व सरल लगता है मगर एक सामुदायिक कार्यकर्ता के लिए अपने संस्था के मिशन एवं लक्ष्य के साथ समुदाय के बिल्कुल अलग चाहतों की मिलान कर पाना एक चुनौती पूर्ण कार्य होता है।
- एक सहजकर्ता के रूप में अपने ज्ञान में अथवा बाहरी संस्था के ज्ञान में उन्हीं चीजों को लाना चाहिए जिसे समुदाय या समूह ने विभिन्न पहलुओं पर विचार कर अपने लिए महत्वपूर्ण माना है एवं उस कार्य हेतु ज्ञान रूपी मदद की गुजारिश की है।
- क्रियाशीलता का महत्व तभी है जब ढूंढे गए समाधान से होने वाला लाभ इस क्रियाशीलता को स्थापित एवं संचालित करने में होने वाले खर्च से अधिक हो। आत्मनिर्भरता के लिए किए गए किसी भी तरह के प्रयास के लिए यह लागू होता है जिसमें कामकाजी पशुओं का सतत् कल्याण शामिल है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि लाभ–लागत अनुपात को हमेशा धनात्मक रखें।

सिद्धान्त बॉक्स 2. पशु कल्याण को बढावा देने के लिए उत्प्रेरण

पशु कल्याण को बढावा देने के लिए पशु कल्याण वैज्ञानिक एवं उपचारकर्ता लगातार पशु मालिकों एवं इन्हें देख–भाल करने वालों को उत्प्रेरित करने हेतु नया–नया तरीका ढूंढ रहे हैं। उत्प्रेरण के कई तरीके पशुओं को रखने व उपयोग के विभिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त है। बाहरी उत्प्रेरण, जो कि पशु कल्याण के प्रशिक्षण, प्रमाणीकरण अथवा न्यायिक मामलों के योजनाओं में होता है एवं अन्तः उत्प्रेरण, जो समूहों एवं समुदाय के अन्दर पशु कल्याण को बढावा देने के लिए पनपता है के बीच कुछ अन्तरों को यहां विस्तृत किया गया है।

पशु कल्याण के लिए बाहरी उप्रेरण	**पशु कल्याण के लिए सहभागी तरीकों के माध्यम से समुदाय के अन्दर पनपा उत्प्रेरण**
शिक्षा बाहरी स्त्रोतों जैसे पढ़ाकर, प्रशिक्षितकर प्रकाशित सामग्री बांटकर पशु मालिकों को पशु कल्याण का ज्ञान दिया जाता है।	**ज्ञान की साझेदारी** पशु मालिक आपस में एक साथ बैठते हैं। आपस में विचार विमर्श कर समस्याओं को विश्लेषित करते हुए अपने वर्तमान ज्ञान को विकसित करते हैं एवं पशु कल्याण की समझ बनाते हैं।
उत्साहवर्धन प्रशिक्षक एवं सहयोगी संस्था कल्याण को बढावा देने के लिए इनाम देकर लोगों का उत्साह वर्धन करते हैं। इनाम बाहरी निवेश, अनुदान, मुफ्त इलाज, पशु कल्याण संबंधी संसाधनों को खरीदने के लिए धन अथवा कल्याण स्थिति को निर्धारित कर दिया जाता है।	**आपसी उत्प्रेरण** समूह सदस्य एक दूसरे को नियमित बैठक में भाग लेने हेतु उत्साहित करते हुए कल्याण संबंधी गतिविधियों को करने हेतु प्रेरित करते हैं जो कि पशु कल्याण को बढावा देता है।। समूह के अन्दर प्रत्येक सदस्यों के बीच एक धनात्मक प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न होती है जो प्रत्येक सदस्य को एक दूसरे से पशु को बेहतर रखने को प्रेरित करता है।
बाध्यता गुणवता निर्धारित कर प्रमाणीकृत करने वाली योजनाएं ऐसे किसानों को अलग कर देती है जिनके पशुओं का कल्याण स्थिति कमजोर है जिसके कारण अनुबन्ध से होने वाली आय समाप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए–राष्ट्रीय या स्थानीय न्यायिक तंत्र का प्रयोग पशु मालिकों को दण्डित करने हेतु प्रयोग में लाया जाता है जो पशु मालिकों को आर्थिक दण्ड या जेल की सजा भी देते हैं।	**आपसी दबाव** पशु रखने वाले समुदाय के समूह सदस्यों द्वारा एक दूसरे पर सामाजिक दबाव का प्रयोग करते हुए सभी को अपने द्वारा ही बनाए गए नियमों को पालन करने तथा योजनाओं को क्रियान्वयन करवाकर पशु कल्याण सुनश्चित करता है। सहमति से बनाए गए नियमों को पालन न करने वालों के लिए दण्ड प्रक्रिया का निर्धारण सामूहिक रूप से करते हुए इसे लागू भी आसानी से कर लेता है।

स्त्रोतः– वैन डिजक लिसा एवं प्रिचर्ड जे0सी0 (2010) शिक्षा, उत्साहवर्धन, तथा बाध्यता पर और अधिक जानकारी के लिए पढे– मैन, डी0सी0जे0, केन्ट, जे0पी0, वेमेल्स फेलडर, एफ, आफनर एवं टायटन्स, एफ0ए0 एम0 (2003) ''कृषि सम्बंधी गतिविधियों का प्रयोग एवं कल्याण आंकलन एवं पशु कल्याण 12, 523528

भाग 1

कार्यकारी पशु एवम् उनका कल्याण

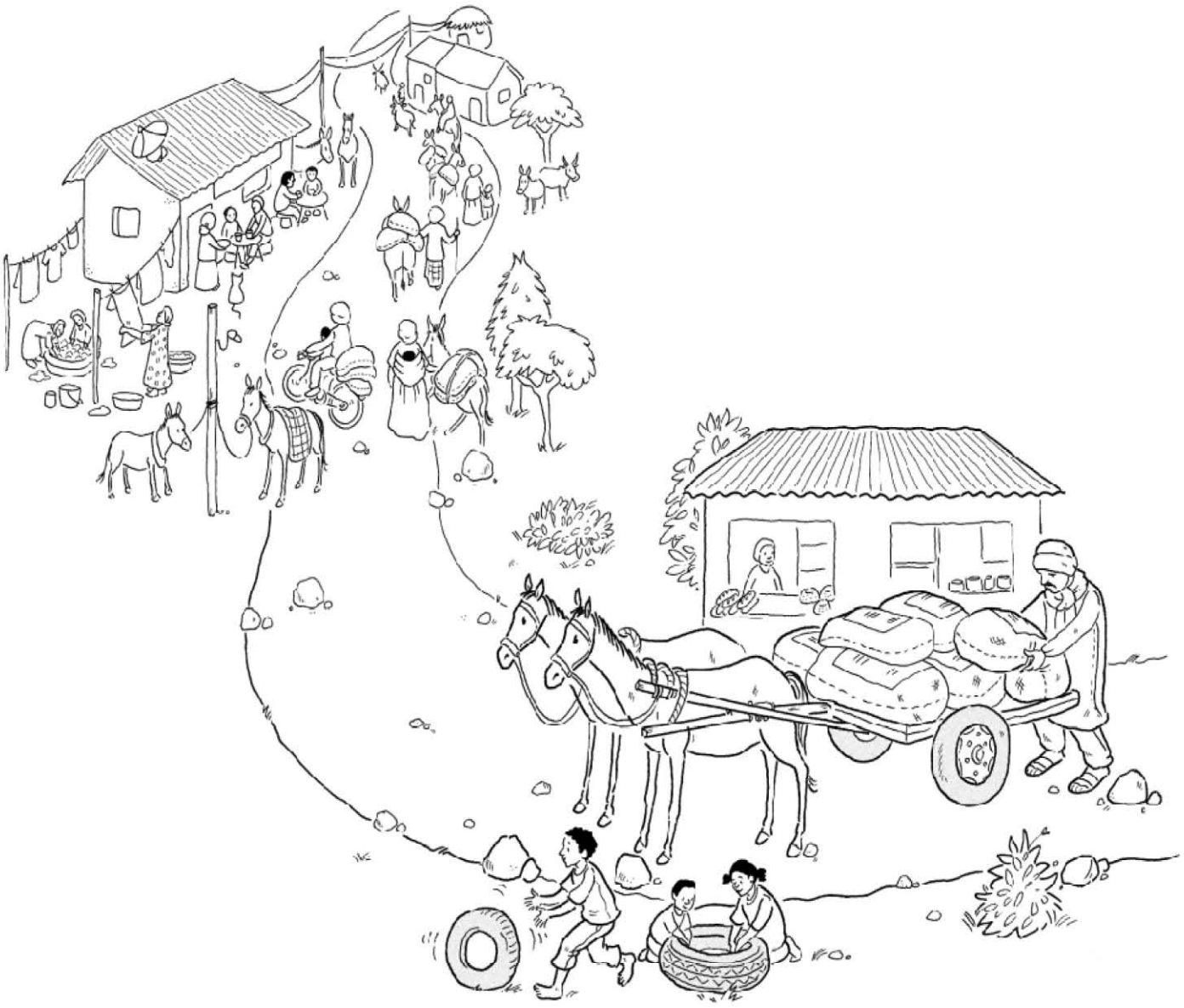

भाग 1 में आपको क्या मिलेगा?

इस भाग में कार्य करने वालों का परिचय है। अध्याय 1 में हम कार्य करने वाले पशु व उनकी लोगों के साथ निर्भरता के सम्बन्ध को देखते हैं। जैसे:

- कार्य करने वाले पशु कौन कौन से हैं
- लोग कार्य करने वाले पशुओं को कैसे रखते हैं
- कार्यकारी पशु, उनके मालिक, परिवार व समुदाय किस तरह एक दूसरे पर निर्भर हैं

अध्याय 2 में हम देखते हैं कि पशु कल्याण का क्या अर्थ है ? कार्यकारी पशुओं की भावनाएं व आवश्यकताएं क्या हैं ? पशु की भावनाएं व आश्यकताएं व्यक्त करने के लिए उसके द्वारा किये गए व्यवहार को हम देखते हैं और सोचते हैं कि इस व्यवहार को कैसे समझना है, जिससे पशु की आवाज सुनी जा सके।

हम यह भी चर्चा करते हैं कि:

- कार्यकारी पशुओं के लिए अच्छा कल्याण क्यों जरूरी है ?
- उनके कल्याण की स्थिति किन बातों के द्वारा निर्धारित होती है ?
- उनके कल्याण को सुधारने के लिए कया बदलाव किया जा सकता है ?

भाग 1 को कैसे प्रयोग करें ?

इस किताब में दिए गए अध्याय, सीख एवं अनुभव के रूप में व्यवस्थित हैं। आपको इसे किसी ऐसी जगह पढ़ने की जरूरत होगी जहाँ कार्य करते पशुओं को देख सकें व आसपास घूम सकें जैसे किसी ऐसी चाय की दुकान जहाँ पशु एक साथ एकत्र होते हों, या सड़क पर जहाँ से वह नियमित रूप से गुजरते हों । आप फिर पढ़ पाएंगे और छोटे लिखित अभ्यासों को कर पाएंगे और अपने पास घूमते पशुओं का निरीक्षण कर पायेंगें। प्रत्येक अभ्यास सामान रूप से दिया गया है:

- एक छोटा अभ्यास दिया गया है या खाली जगह में उत्तर देने के लिए कुछ प्रश्न (यदि आप इस किताब का अन्य लोगों के साथ इस्तेमाल कर रहे हैं तो अलग से कुछ सादे कागजों का प्रयोग भी कर सकते हैं)। यह प्रश्न आपको सोचने पर मजबूर करेंगे या गत अनुभवों से सीखने को मिलेगा। कुछ अभ्यासों में आपको पशु के चारों ओर घूमना होगा, उसे देखना होगा और जो भी देखा या सोचा उसको नोट करना होगा।
- बहुत से अभ्यासों में एक चित्र है जो उत्तर देने में आपकी मदद करेगा।
- एक टिप्पणी, प्रश्न का उत्तर देगी व आपको अपने ज्ञान की परीक्षा करने में मदद मिलगी। यदि आप चाहते हैं तो, अपने अनुभव व निरीक्षण के आधार पर, दिए गए उत्तर के साथ अतिरिक्त नोट लिख सकते हैं।

भाग एक को पढ़ने के बाद आपको यह सोचने में समर्थ होना चाहिए कि जब आप बाहर हों व कार्य करते हुए पशुओं को देखें तो दिए गए सवालों व अभ्यास के बारे में सोचें।

अध्याय–1

"कामकाजी पशु और उन्हें रखने वाले समुदाय"

अध्याय 1 में आप इस बारे में जानेंगे कि कार्य करने वाले पशु कौन से हैं, लोग उन्हें क्यों रखते हैं एवं कामकाजी पशु और लोग एक–दूसरे पर किस प्रकार निर्भर हैं।

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप जानेंगे कि–

- कामकाजी पशु कौन से हैं और वे क्या करते हैं?
- लोग और पशु अपनी जीविका एवं कार्य प्रणाली द्वारा किस प्रकार जुड़े हुए हैं?
- लोगों की अपने कामकाजी पशुओं के प्रति–जिम्मेदारियॉं क्या हैं और वे जिम्मेदारियाँ कौन सी हैं?

कामकाजी पशु कौन से हैं और वे क्या करते हैं?

प्रश्न–1 आपके गॉव, बाजार या गली में, आपके आसपास जो पशु हैं, उन्हें देखना शुरू करें। वे जो कर रहे हैं, उसे लिख लें। कौन से पशु काम कर रहे हैं और कौन से नहीं ? काम करने वाले पशु से हमारा क्या तात्पर्य हैं?

.....

.....

.....

.....

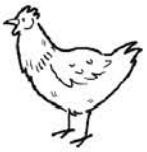

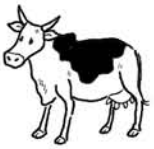

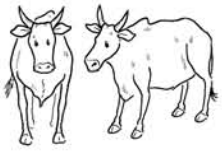

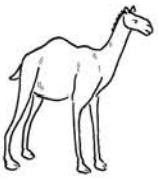

लोगों की आजीविका में काम करने वाले पशु कैसे सहयोग करते हैं? अन्य पशुधन से लोगों को जो फायदा होता है, उससे ये पशु किस प्रकार से अलग हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

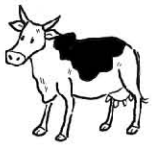

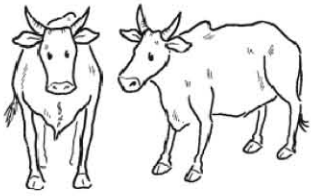

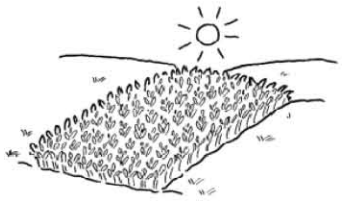

पशु जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी और मुर्गियां भोजन या रेशे का उत्पादन कर के दूध, मॉस, अण्डे या ऊन जैसे जीविकोपार्जन के साधनों में सहयोग करते हैं। काम करने वाले पशु जैसे घोड़े, गधे, ऊँट, बैल और याक अपनी ऊर्जा और शारीरिक शक्ति का प्रयोग कर वस्तुओं या लोगों को ले जाते हैं, जैसे खेत जोतना और लोगों या वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

प्रश्न–2

अपने आसपास के पशुओं को फिर से देखिये और उन कार्यशील पशुओं के बारे में विचार कीजिए जो आपने देखे हैं। ये पशु क्या ढ़ो रहे या खींच रहे हैं? उनके साथ काम करने वाले लोगों से पूछिये कि क्या कभी उनके पशु कोई अन्य वस्तु भी खींचते या ढ़ोते हैं?

खींचना **ढोना (ले जाना)**

.....

.....

.....

.....

.....

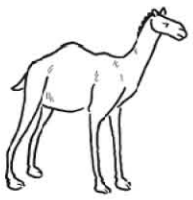
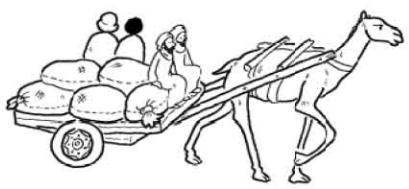

जो पशु किसी चीज को खींचते हैं वे ड्राट कहलाते है। जो विभिन्न प्रकार के वजन पीठपर ढ़ोते हैं, वे पैक जानवर कहलाते हैं। कुछ पशु अलग–अलग समय पर दोनों प्रकार के काम करते हैं। एक सामुदायिक सुगमकर्ता होने के नाते आपके लिए यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि आपके क्षेत्र में कार्यशील पशुओं द्वारा किस प्रकार के कार्य किये जाते हैं और उनसे सम्बन्धित साज, बुग्गी व अन्य सामान के स्थानीय नाम क्या हैं ?

व्यक्ति या समुदाय कैसे कामकाजी पशुओं पर निर्भर हैं?

प्रश्न–3

अपने आस–पास फिर से देखियें और प्रश्न 2 के उत्तर के बारे में विचार कीजिए। बताइये कि ड्रॉट पशुओं द्वारा किया गया कार्य लोगों की जीविका में कैसे योगदान करता है ? ये बहुत से तरीके हो सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

कार्यशील पशु कृषि उत्पाद, पशु चारा, निर्माण सामग्री और बहुत सी अन्य वस्तुओं के यातायात द्वारा लोगों को पैसा कमाने में मदद कर सकता है। वे परिवार और समुदाय को अप्रत्यक्ष रूप से भी लाभ पहुँचा सकते हैं। जैसे–मानवीय श्रम से छुटकारा दिलाकर मंहगे मशीनी यातायात का सस्ता विकल्प बनकर, समाजिक स्तर प्रदान करके और आत्मसम्मान व खुशी में वृद्धि करके भी।

प्रश्न–4

लोग कार्यशील पशुओं का कहॉ प्रयोग करते हैं ? एक परिवार का क्या होता, यदि उनका जानवर खराब स्थिति में होता और काम न कर पाता। क्या उनकी जीविका अलग होती, यदि उनका पशु बीमार होता या उनके पास पशु न होता। लिखिये कि परिवार के प्रत्येक सदस्य का जीवन किस प्रकार बदल सकता था ? अपने आस पास के पशु मालिकों से पूछिये कि क्या कभी उन्होंने इस स्थिति का अनुभव किया है और इस स्थिति ने उन पर और उनके परिवार पर क्या प्रभाव डाला ?

पति .....

.....

पत्नी .....

.....

लड़की .....

.....

लड़का.....

.....

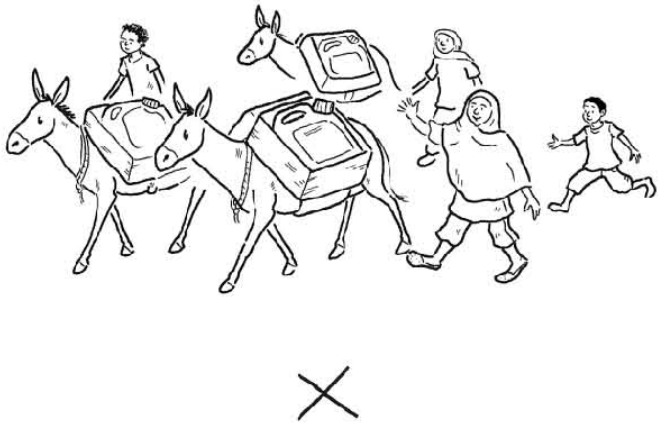

बुजुर्ग व्यक्ति .....

.....

बिना एक कार्य शील पशु के सारे परिवार को पानी, पशु चारा, आग जलाने की लकड़ी और अन्य सामान लाने व ले जाने के लिए ज्यादा कठिन परिश्रम और ज्यादा समय के लिए काम करना पड़ सकता है। जिन लोगों से आपने बातें की उन्होंने क्या जबाब दिया ? क्या उनके परिवार के सदस्यों के पास अन्य काम और आराम करने के लिए कम समय था? क्या उनके परिवार की आय कम थी? क्या उन्होंने अपने घरेलू बजट से पशु चिकित्सक को या नया जानवर खरीदने के लिए लोन लेने पर ज्यादा पैसा खर्च किया था? क्या वे महत्वपूर्ण आवश्यकताएं जैसे बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने में कम समर्थ थे और उनके बच्चों को स्कूल जाने के बजाय घरेलू कार्यों पर अपना समय व्यय करना पड़ा? बहुत से लोग दैनिक कार्यों और पैसा कमाने के लिए अपने पशुओं पर भरोसा करते हैं।

कामकाजी पशु व्यक्ति या समुदाय पर कैसे निर्भर हैं।

प्रश्न–5

उन पशुओं के बारे में विचार कीजिये जो आपने देखें हैं। वे अपनी आवश्यकताओं जैसे भोजन और पानी, आवास और आराम, अच्छा स्वास्थ्य और अन्य पशुओं की संगति की पूर्ति स्वयं कैसे कर सकते हैं? क्या इनमें से कुछ की पूर्ति के लिए उन्हें लोगों की मदद की आवश्यकता हैं? बताइये कौन–कौन सी और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

जंगली या आवारा घोड़े, गधे, पशु और उँट अपनी देख–भाल करने में समान्य व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। वे अपने परिवार के समूह में पौधे और घास चरते हैं, पानी और छाया की खोज में लम्बी दूरियाँ तय करते हैं। और जमीन पर लौटते हैं या पेड़ों से अपने शरीर को रगड़कर अपनी त्वचा की धूल और पर जीवियों को हटाते हैं। और पीठ पर बोझा ढोने वाले पशु लोगों के लिए कठिन परिश्रम करते हैं। इसका मतलब उनके पास अपना समान्य व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए ज्यादा आजादी और समय नहीं होता है। कार्यशील पशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति और पर्याप्त ऊर्जा वाला भोजन, अच्छा स्वास्थ्य स्थिति में रहने के लिए लोगों पर निर्भर रहते हैं ताकि वे उत्पादक ढंग से काम कर सकें।

प्रश्न – 6

जहाँ आप घूम रहे हैं या बैठे हैं वहाँ और पशुओं को देखिये। पशुओं के आराम करने व कार्य करने के समय के बारे में सोचिये। व्याख्या कीजिये कि कौन से पशु अच्छे स्वास्थ्य व पर्याप्त ऊर्जा के साथ कार्य करते हैं व परिवार के लिए उत्पादक हैं। उनको पानी व खाना कौन देता है। जहाँ वह रहते हैं उस जगह को कौन साफ़ करता है। पशु के साथ किसी व्यक्ति से पूछिए कि पशु को किस–किस देखभाल की जरूरत होती है व इसको कौन करता है?

.....

.....

.....

.....

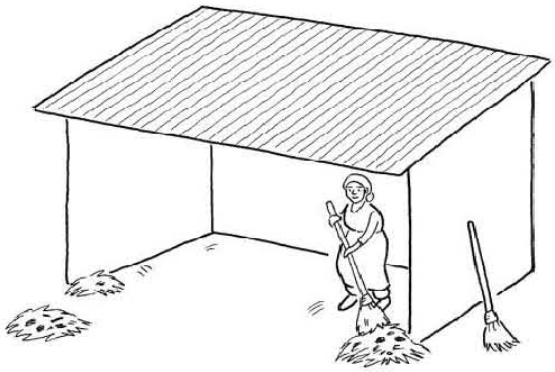

व्यक्ति कार्य करने वाले पशुओं के जीवन पर नियंत्रण करते हैं। व्यक्ति चुनते हैं कि कब उनका पशु खा सकता है, पी सकता है, सो सकता है, वह क्या कर सकते हैं वह कहाँ जा सकते हैं व और कौन से पशुओं को वे पाल सकते हैं? व्यक्ति अपने पशुओं की भलाई के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि वह पशु को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करते हैं और यही उनके द्वारा उनके पशुओं की देख–भाल करने से रोकता है।

व्यक्तियों या समुदाय की जिन्दगी किस तरह पशुओं के रख–रखाव के तरीकों से प्रभावित होती है?

प्रश्न–7

मालिकों व पशुओं को चलाने वालों को देखिये और उन अन्य कार्य करने वाले पशुओं के बारे में सोचिये जिन्हें आपने देखा है। यह सोचने में कुछ समय लीजिए कि किस तरह व्यक्ति सोचते हैं, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और कार्य करने वाले पशुओं के साथ व्यवहार करते हैं और यह किस तरह से पशु की उत्पादकता और स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इसके बाद खाली स्थान में + या – के द्वारा यह बताईये किस तरह = के चिन्ह के बाद दी गयी टिप्पणी प्राप्त होगी ।

- कार्य करने वाला पशु ( ) जिम्मेदार मालिक = अधिक स्वस्थ व उत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) उपलब्ध पानी = शरीर में पानी की कमी वाल व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) सफाई, सूखी काठी = अधिक आराम में व उत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) चिकित्सा जाँच = अधिक स्वस्थ्य व उत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) पीटना = दर्द से भरा, सुखी व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) खुरेरा करना = बीमारियों से मुक्त साफ व उत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) धमकाना,, डराना = भ्रमित चिंतित व कम उत्पादक पशु

- कार्य करने वाला पशु ( ) पौष्टिक आहार = अधिक भूखा व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) आराम से घूमने की जगह = पशु आराम में व अपना प्राकृतिक व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है।
- कार्य करने वाला पशु ( ) जख्म = अधिक दर्द से भरा व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) अन्य पशुओं का साथ = अधिक आराम में पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) डर = घबराया हुआ, नाखुश व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) ज्यादा बढ़े हुए व गंदे पैर = अस्वस्थ, लंगड़ा व अनुत्पादक पशु
- कार्य करने वाला पशु ( ) रहने के लिए साफ़ व आरामदायक स्थान = आराम में व उत्पादक पशु अपने

कार्यकारी पशुओं के प्रति लोगों का अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार, पशुओं के कल्याण पर अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव डालता है और यह पशु की उत्पादकता को प्रभावित करता है। अपने अभ्यास को जारी रखते हुए यह नोट कीजिये कि किस तरह लोगों का बर्ताव पशुओं के स्वास्थ्य व उनकी कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है।

प्रश्न – 8

इस अभ्यास में दी गयी टिप्पणी के प्रथम भाग को पढ़िए व दूसरे भाग में खाली जगह में (अ) पशु मालिक के परिवार पर (ब) पशु पर लाभ दिखाइए।

यदि पशु अधिक स्वस्थ होता व ज्यादा लंबी उम्र जीता तो

अ. किस तरह पशु मालिक व उसके परिवार का लाभ होता ?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

यदि पशु अधिक उत्पादक होता तो

अ. किस तरह पशु मालिक व उसके परिवार को लाभ होता?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

.....

यदि पशु को चलाना अधिक आसान होता तो

अ. किस तरह पशु मालिक व उसके परिवार को लाभ होता ?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

यदि पशु तनाव व थकान को जल्दी दूर कर ले तो

अ. किस तरह पशु मालिक व उसके परिवार को लाभ होता ?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

यदि पशु के कुछ जख्म हों व वह कुछ दिन कार्य नहीं कर पाये तो

अ. किस तरह पशु मलिक व उसके परिवार को लाभ होता ?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

यदि लोग अपने कार्य करने वाले पशु का अधिक ध्यान रखें तो

अ. किस तरह पशु मालिक व उसके परिवार को लाभ होता ?

.....

.....

ब. किस तरह पशु को लाभ होता ?

.....

.....

व्यक्ति अपने पशु का जो भी नुकसान करते हैं या वह जो अनुकूल कार्य करने में असमर्थ रहते हैं, तो इसका परिणाम पशु के लिए समस्या के रूप में प्रकट होता है और यह पशु मालिक व उसके परिवार के लिए भी एक नुकसान है। पशुओं को ध्यान से रखने में, पशु मालिक व उसके परिवार की आजीविका के साथ साथ पशु के लिए भी लाभ है।

अब आप समर्थ होंगे

- यह बताने में कि किस तरह पशु अपनी ऊर्जा व शक्ति से लोगों की मदद करते हैं।
- कि कैसे जंगली जानवर अपनी देखभाल खुद कर सकते हैं और क्यों काम करने वाले पशु अपने को स्वयं वह सब नहीं दे सकते जिनकी उन्हें जरूरत है।
- यह बताने में कि जब पशुओं से हम कार्य लेते हैं तो क्यों वे अपना प्राकृतिक व्यवहार प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं जैसे घास चरना, पानी ढूँढना, खेलना व आराम करना।
- चर्चा करने में कि किस तरह पशु अपनी भावनाओं व जरूरतों की पूर्ति के लिए व्यक्तियों पर निर्भर हैं।

- उदाहरण देने में कि कैसे अच्छी तरह रखे गए पशु उत्पादक होते है व किस तरह परिवार व समुदाय के जीवन में योगदान देते हैं।

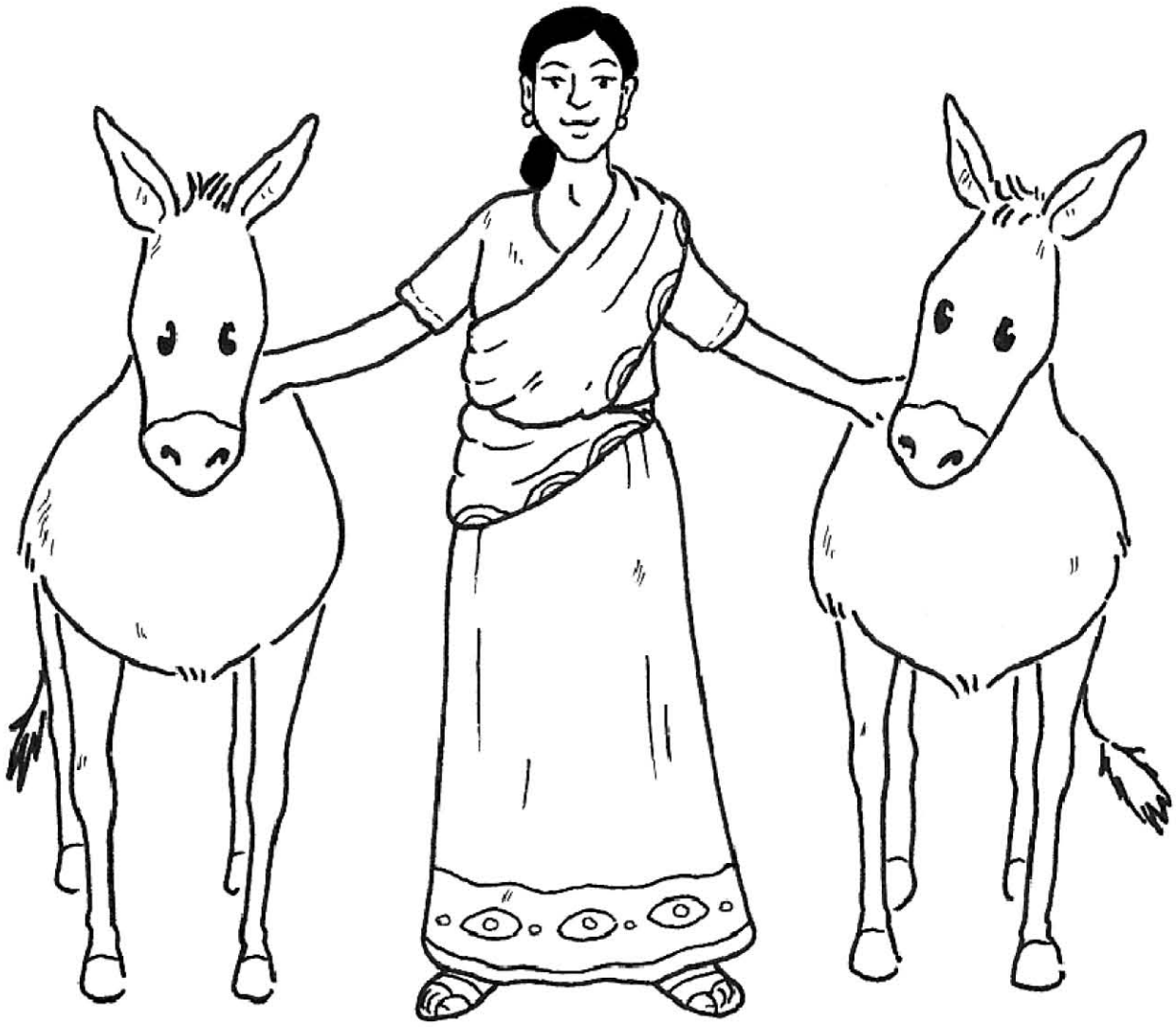

आप अपने पशुओं का ध्यान रखिये, वे आपका ध्यान रखेंगे

अध्याय–2

पशु कल्याण

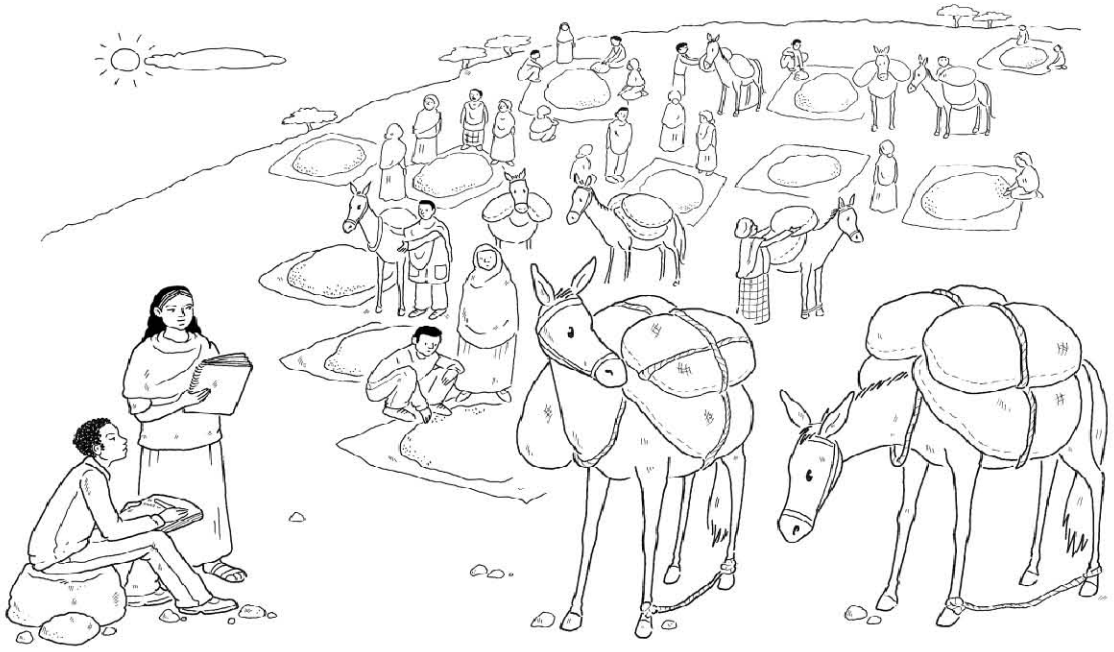

इस अध्याय में क्या प्राप्त होगा ?

यह अध्याय पशु कल्याण के बारे में परिचय करायेगा जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं

- अच्छा पशु कल्याण क्या है?
- पशु व उसके व्यवहार को देखकर पशु कल्याण कैसे समझ पायेंगे ?
- पशु की जिन्दगी को प्रभावित करने वाले कारकों से पशु कल्याण कैसे प्रभावित होता है?

यह अध्याय भी प्रथम अध्याय की तरह ही बनाया हुआ है। पहले एक प्रश्न या छोटा सा अभ्यास जो कि आपकी सोच जो कि पुरानी सोच पर आधारित है, को बाहर लायेगी। उसके बाद जो भी उत्तर या प्रत्युत्तर आपके दिमाग मे आयेगा वह आपकी जानकारी को जॉचने में मदद करेगा। पशु कल्याण का उद्देश्य सभी पशुओंपर लागू होता है । इसलिए जब भी आप बाहर जाते हों तो सभी काम करने वाले, खेती वाले, पालतू तथा जंगली जानवरों का कल्याण हो रहा है या नही, देखना चाहिए यह आपके प्रश्न व अभ्यास के उत्तर देने में मदद करेगा। यह आपके अनुभव को बढ़ायेगा और साथ ही नये–नये प्रश्न आपके दिमाग में पैदा होंगे।

पशु कल्याण क्या है?

पशु कल्याण शब्द का प्रयोग पशु की क्या जरूरत है और वह कैसा महसूस करते हैं जानने के लिए किया गया है। कभी–कभी कल्याण, पशु का अच्छा होना या उसके गुणवत्तापूर्ण जिन्दगी का द्योतक भी होता है। पशु कल्याण एक लगातार सोच हो सकती है, यह अच्छा, बुरा या कहीं इसके बीच में हो सकता है। यदि पशु स्वस्थ है ओर अच्छा महसूस करता है और उसकी जरूरत पूरी हो रही है इसका मतलब अच्छा पशु–कल्याण है। इस किताब का उद्देश्य सामूहिक प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करना ताकि कार्य करने वाले पशुओं का कल्याण हो सके।

यह अध्याय पढ़ने के बाद आप जान पायेंगे कि –

- पशु का निरीक्षण करना कितना महत्वपूर्ण है एवं पशु को क्या जरूरत है और वे कैसा महसूस करते हैं?
- निरीक्षण करना कि पशु अपने आस–पास के वातावरण, संसाधनों, लोगों से कैसे घुलता–मिलता है?
- सूचीबद्ध करना कि कार्य करने वाले पशु के अच्छे कल्याण के लिए घर पर, कार्य करने के दौरान, तथा आराम के दौरान क्या–क्या जरूरत होती है ?
- उदाहरण प्रस्तुत करना कि कैसे पशु की जरूरत उनके रहने, काम करने व आराम करने के वातावरण के अनुसार परिवर्तित हो जाती है?

बॉक्स वाली कहानियॉ पशु कल्याण के बारे में आपकी सोच बढ़ायेगी।

कामकाजी पशु के निरीक्षण का अभ्यास

पशुओं के बारे में जानने के लिए उनको सही तरीके से निरीक्षण करना ही एक सही रास्ता है। अगले कुछ अभ्यासों के लिए आपको ऐसे जगह पर एक घण्टा खर्च करने की जरूरत होगी जहॉ पर कार्य करने वाले पशु उपस्थित हों। यह अभ्यास पूरी तरह से इस किताब को जानकर, पशु को व उसके आसपास के वातावरण को देखकर करें।

प्रश्न 1

कामकाजी पशुओं को अकेले या समुह मे पाँच से दस मिनट के लिए निरीक्षण करें। आपने पशु के साथ और उसके आसपास हो रहे किन–किन गतिविधियों को अवलोकित किया? पशु के साथ जो हो रहा था वह अच्छा था या बुरा ? पशु उनको पसंद कर रहे थे या नहीं ? पशु के व्यवहार, उसके क्रियाकलापों, तथा लोगों, संसाधनों व वातावरण के प्रति पशु के व्यवहार के बारे में आपने जो भी महसूस किया उसे आप सूचीबद्ध करिए।

क्या हो रहा है?.....

.....

आप क्या सोचते हैं, यह पशु के लिए अच्छा है या बुरा?.....

.....

पशु क्या कर रहा है? उसके व्यवहार के बारे में विस्तार पूर्वक बताइये।.....

.....

और क्या हो रहा है?.....

.....

आप क्या सोचते हैं यह पशु के लिए अच्छा है या बुरा?.....

.....

पशु क्या कर रहा है? उसके व्यवहार के बारे में विस्तार पूर्वक बताइये.....

.....

दूर से निरीक्षण पशु के बारे में बहुत कुछ बता सकता है। जैसे कि वे क्या कर रहे हैं, कैसे कर रहे हैं। (पशु व्यवहार) आप और भी देख सकते हैं, जैसे कि पशु, लोगों को व्यवहार, संसाधन और वातावरण की दूसरी चीजों से कैसे प्रभावित होता है। ध्यान से पशु का निरीक्षण करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह, पशु को क्या जरूरत है और उसे वे कैसे महसूस करते है को बताता है। और यह भी बताता है कि पशु कल्याण कैसा है ओर इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है?

कामकाजी पशुओं की आवश्यकता क्या है?

प्रश्न 2

कार्य करने वाले पशु अच्छे, स्वस्थ रहें और पालने वालों के लिए फायदेमंद हो, उसके लिए पशु को क्या क्या जरूरत होती है? जो भी आप सोच सकते हो उन्हें सूचीबद्ध करें।

मनुष्यों की तरह पशुओं को भी स्वस्थ रहने, अच्छा महसूस करने तथा कार्य करने लायक होने के लिए विभिन्न तरह की चीजों की आवश्यकता होती है। पशु तथा मनुष्य के फायदे के क्रम में व पशु कल्याण को बढ़ाने के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि पशु को अच्छा रहने के लिए क्या जरूरत है और वे कैसा महसूस करते हैं। पृष्ठ संख्या 16 पर एक कहानी है जो कि यह बताती है कि अच्छे पशु कल्याण के लिए पशु को क्या–क्या जरूरत होती है।

सिद्धान्त बॉक्स – 3 कार्य करने वाले पशु के कल्याण के लिए जरूरतें

कार्य करने वाले पशुओ का एक काय दिन म बहुत ज्यादा ऊजा का आवश्यकता हाता ह। उनको पर्याप्त मात्रा में पानी तथा संतुलित आहार की प्रत्येक दिन जरूरत होती है। और इसके लिए पर्याप्त समय की जरूरत होती है जिसमें कि वह आराम से खा पी सकें। पर्याप्त मात्रा में खाना तथा पानी की जरूरत पूरा करने के लिए पशुओं को अच्छा महसूस करने की जरूरत होती है। अच्छा खाना तथा पानी पशु को शक्ति व उर्जा प्रदान करता है जो कि पशुओं को उनके मालिकों के लिए फायदेमंद बनाता है।

एक पशु प्रतिदिन कितना कार्य कर सकता है इसकी एक सीमा होती है। यदि पशुमालिक अपने पशु से ज्यादा कार्य करवाता है तो दिमागी और शारीरिक रूप से पशु कमजोर हो जायेगा। कार्य करने वाले पशुओं को फायदेमंद बनाने के लिए उनको पर्याप्त मात्रा मे आराम देना एक दूसरा रास्ता है।

कार्य करने वाले पशु हर दिन पैरों पर होते हैं यहाँ तक कि उनके मालिक बैठे हुए हों या आराम कर रहे हों। यदि पैरों की देखभाल अच्छी तरीके से नहीं की जाये तो वे क्षतिग्रस्त व दर्द युक्त हो सकते हैं। कार्य करने वाले पशुओं के पैरों की अच्छी तरह से रोजाना देखभाल, उनको अच्छा रखने मे मदद करता है।

हर प्रकार के कार्य के लिए अच्छे व सुरक्षित औजारों की जरूरत होती है, जो कि पशुओं को दर्द व जख्म से बचाता है। उदाहरण के लिए बुग्गी, साज, काठी इत्यादि। औजार स्थानीय बाजार में उपलबध चीजों से अच्छा बना होना चाहिए जो कि प्रत्येक पशु के लिए अच्छी तरह से फिट हो। औजार हमेशा साफ तथा सूखे रखने चाहिए।

अच्छा स्वास्थ्य अच्छे कल्याण का एक महत्वपूर्ण भाग है। बीमारियाँ पशु कल्याण को प्रभावित करने के साथ–साथ पशु के शरीर ही नहीं बल्कि उसकी मानसिक स्थिति व सोच को भी प्रभावित करती है। विभिन्न वातावरणीय परिस्थितियों मे अच्छा स्वास्थ्य शारीरिक व मानसिक स्थिरता के लिए मदद् करता है जिससे कि वे अच्छी तरह से कार्य कर सकें। स्वास्थ्य देखभाल व प्राथमिक चिकित्सा सुविधा जो कि पहुँच में, खरीदने लायक व उपलब्ध हो, पशु को पीड़ा व दर्द से दूर तथा पशु को कार्यदायक रहने में मदद करता है।

अच्छा पशु स्वास्थ्य प्रबधंन में खाना, पानी व आराम करने के लिए साफ सुथरा स्थान भी सम्मिलित होता है। कार्य व आराम के दौरान पशु का सही तरीके से नियंत्रण व मानवीय तरीके से देखभाल भी बहुत महत्वपूर्ण है। जिन्दगी भर अच्छे कल्याण के लिए संसाधनो की उपलब्धता तथा शान्ति प्रिय नियंत्रण बहुत आवश्यक है। यदि पशु की अच्छी तरह से देखभाल होती है तो वे और भी ज्यादा कार्य करते व जीते हैं।

कार्य करने वाले पशु को प्रतिदिन, कार्य करने के लिए ऊर्जा जमा करने की जरूरत होती है। यदि पशु को खराब मौसम का सामना करना हो तो पशु अपनी जमा की हुई ऊर्जा को , अपने आप को गर्म या ठण्डा रखने या बीमारियों या थकावट से बचने में खर्च करता है। पशुओं को आराम करने तथा बरसात, गर्मी, तेज हवा आदि से बचने के लिए खुला, हवादार, छायादार स्थान की आवश्यकता होती है। एक आरामदायक वातावरण पशु को स्वस्थ तथा कार्य करने योग्य रखता है।

कार्य करने वाले पशु अक्सर अपने प्राकृतिक वातावरण से दूर होते हैं। इसमें स्वयं देखभाल करने का अवसर जैसे कि लोटना, दौड़ना, रगड़ना आदि और अपनी जाति के दूसरे पशुओ के साथ घुलना–मिलना जैसे कि एक दूसरे को पुकारना आदि सम्मिलित होता है। पशुओं को दूसरे पशुओं के साथ तथा प्राकृतिक चीजों के पास रहना अच्छा लगता है। वे जाचना, बदलना, ऑकना ओर वातावरण की दूसरे चीजों के साथ घुलने मिलने के अवसरो में मजा लेते हैं और जब भी मौका मिलता है तो वे उनमें से चुनाव करते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उनको पर्याप्त शारीरिक व सामाजिक वातावरण मिले ताकि वह अपने आपको सुरक्षित व आरामदायक महसूस कर सके जो कि उनको कार्य करने मे मदद करता है।

प्रश्न 3

दूसरे पशुओं की ओर 5 से 10 मिनट देखें। वे कौन –कौन सी चीजें हैं जिनकी उनको जरूरत है और उन्हें अपने आसपास के वातावरण, संसाधनों या लोगों से मिल रही है तथा कौन सी चीजें हैं जो उन्हें नहीं मिल रही है?

मिल रही हैं।	नहीं मिल रही हैं।
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

यद्यपि मनुष्य व पशु समान नहीं होते हैं लेकिन दोनों ही सजीव हैं। इसलिए दोनों को समान आधारभूत चीजों की जरूरत पड़ती है। जितनी चीजें आपको अच्छा महसूस करने या कार्य करने के लिए जरूरत होती हैं उतनी ही पशुओं को भी जरूरत होती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि संसार को पशु की ऑख से देखने का प्रयास करना चाहिए। सोचिए–यदि मैं यह जानवर होता तो मुझे इस स्थिति में स्वस्थ तथा अच्छा महसूस करने के लिए किन किन चीजों की जरूरत पड़ती?

प्रश्न 4

हम यह कैसे पक्का कह सकते हैं कि जो पशु को मिल रहा है वही उसकी जरूरत हैं। ध्यान से नीचे वाली तस्वीर को देखें और प्रत्येक प्रश्न का उतर दें।

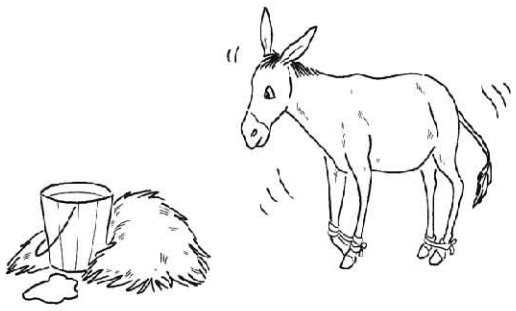

इस गधे को खाना खाने मे क्यों दिक्कत हो सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

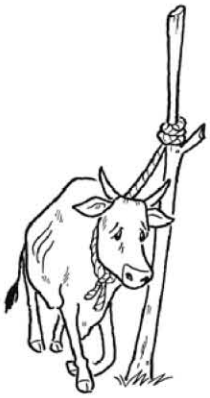

इस पशु को आराम करने मे क्यों दिक्कत हो सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

यदि इस पशु के पास पर्याप्त स्थान नहीं है तो क्या क्या हो सकता है?

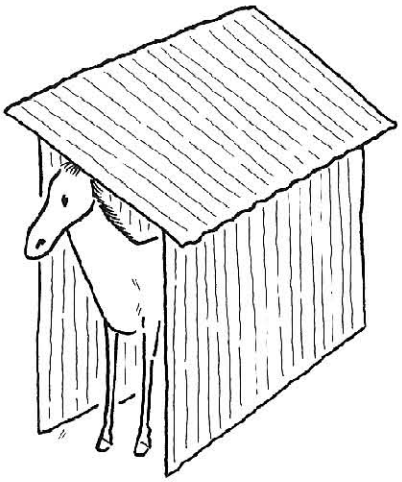

इन पशुओं के साथ क्या क्या हो सकता है यदि इनको पर्याप्त छायादार जगह नहीं मिलती है?

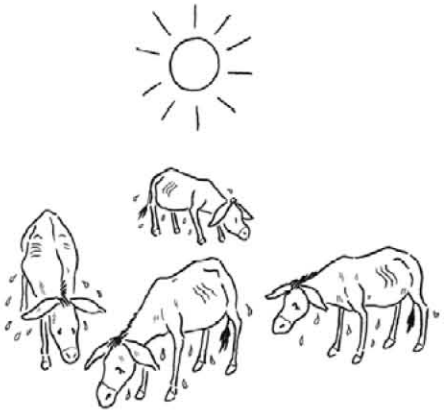

इन बैलों में बीमारी फैलने का खतरा कैसे हो सकता है?

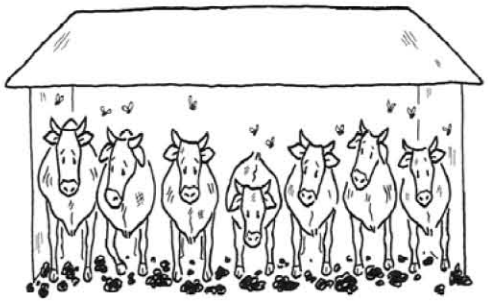

यह गधा कैसे जख्मी हो सकता है?

कभी कभी लोग अपने पशुओं के लिए संसाधन उपलब्ध करवाते हैं लेकिन पशु अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते हैं। उदाहरण के लिए–लोग पशु को खाना–पानी उपलब्ध करवाते हैं लेकिन उसको बॉधकर रखते हैं। इसलिए पशुओं की पहुँच वहाँ तक नहीं हो पाती है। एक पशु के मुँह मे छाले हैं यधपि खाना उसके पास है लेकिन पूरी तरह से खाने मे असमर्थ है। कार्य करने वाले पशु के देखभाल के क्रम में और यह पक्का हो कि वे मालिक के लिए फायदेमंद हो सकें, यह जाँच करना बहुत महत्वपूर्ण कि जो संसाधन मिल रहे हैं उनसे उनका फायदा हो रहा है। हमें इन सब चीजों को, पशु को ध्यान में रखते हुए सोचना चाहिए। हम यही नहीं पूछते कि क्या पशु मालिक अपने पशु को वास्तव में दे रहा है बल्कि यह भी पूछते हैं कि क्या पशु अपनी जरूरत वास्तव में प्राप्त कर रहा है?

प्रश्न 5

अपने चारो तरफ पशुओं को दोबारा देखें। क्या आप एक उदाहरण बता सकते हैं कि एक संसाधन पशु को दिया गया है लेकिन पशु वास्तव में ले नहीं पा रहा है जिसकी कि उसको जरूरत है? इसके कारण लिखिए।

पशु कैसा महसूस करता है?

अगले प्रश्नों के समूह को पूरा करने के बाद आप जान पायेंगे कि पशु कैसा महसूस कर सकता है और कल्याण के लिए पशु का महसूस करना कितना महत्वपूर्ण है?

मनुष्यों व पशुओं की जरूरतें समान होती हैं साथ ही उनके आधारभूत भावनाएं तथा समझ भी। उनको भी आपकी तरह वे चीजे पसंद होती है जो कि उनकी जरूरतों व रोजाना की जिन्दगी को प्रभावित करती हैं। हमेशा संसार को पशु के नजरिये से देखने की कोशिश करना चाहिए। अपने आप से पूछिए यदि मैं यह पशु होता तो मैं केसा महसूस करता? यहॉ क्या हो रहा है? मैं कैसे महसूस करूंगा कि जरूरत पूरी हो रही है या नहीं?

प्रश्न 6

दूसरे पशुओं को पॉच मिनट देखें और यह अच्छा होगा कि वह किसी आदमी के साथ हो। पहले आप यह लिखिए कि आप क्या सोचते हैं कि जो पशु को जरूरत है उसे अपने आसपास के वातावरण से मिल रही है या नहीं?

वातावरण से जरूरत	प्राप्त कर रहा है या नही?	पशु कैसे महसूस कर सकता है?
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

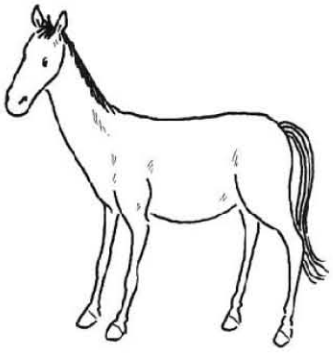

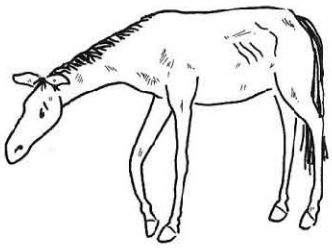

यदि आप पशु होते तो अपने आसपास के वातावरण से क्या चीज पसंद नहीं करते और क्यों?

.....

.....

अब देखते हैं कि पशु कैसा महसूस करता है कि उसके साथ खड़े हुए आदमी के साथ उसका सम्बन्ध–व्यवहार कैसा है? मैं कैसे महसूस करूंगा कि वे मेरे साथ क्या कर रहे हैं या मेरे लिए क्या कर रहे हैं?

आदमी से जरूरत	प्राप्त कर रहा है या नहीं?	पशु कैसे महसूस कर सकता है ?
.....	.....	.....
.....	.....	.....

यदि आप पशु होते तो आप दूसरे आदमी से क्या बंद करने के लिए कहते और क्यों ?

.....

.....

किसी भी कार्य के प्रति पशु अच्छा महसूस करता है या बुरा, मनुष्य द्वारा पशु के लिए किये जा रहे कार्यों को जॉचने के लिए एक रास्ता है। आप कोई भी शब्द चुन सकते है कि पशु और मालिक के बीच क्या हो रहा है? उदाहरण के लिए नम्रता से, जटिलता से, धीरे से, निर्दयता से, दया से, जल्दबाजी में, जानबूझ कर, अधैर्य से, गुस्से में। यह आपको उस तरीके से सोचने में मदद करेगा कि जो कुछ भी पशु के साथ होता है वह पशु को अच्छा महसूस करायेगा या बुरा।

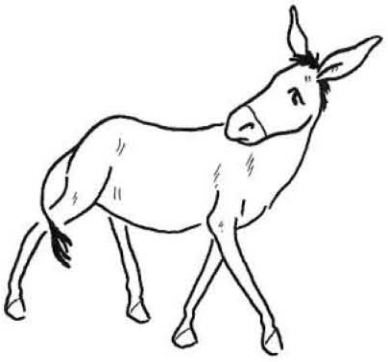

सोचने का अगला चरण–पशु अपनी जरूरत पूरी कर पा रहा है या नहीं कर पा रहा है?

वातावरण क्यों पशु कल्याण के लिए सकारात्मक है या नहीं? क्यों आदमी पशु के प्रति सही तरीके से कार्य कर रहा है या नहीं? वे क्यों संसाधन प्रदान कर रहे हैं या नहीं? यहाँ बहुत सारे कारण हो सकते हैं।

प्रश्न 7

आप अपने पहले वाले निरीक्षणों को देखें और उनकी सूची तैयार करें। पशु के साथ ये चीजें क्यों हुई? आप यह सब उस आदमी से पूछ सकते हैं जो कि पशु के साथ खड़ा है और देखें जो भी कारण वे बताते हैं एवं वे सभी कारण जो आपने सोचे हैं उनसे मिलते हैं या नहीं?

प्रश्न–8

अब आपका पशु निरीक्षण समाप्त हो गया है। क्या आप सोच सकते हैं कि पशु के स्वस्थ और अच्छा रहने के लिए और क्या जरूरत है जो कि पहले के निरीक्षणों में सम्मिलित नहीं किया गया है?

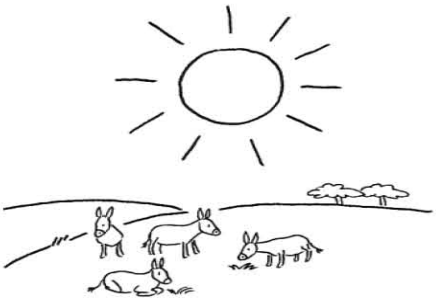

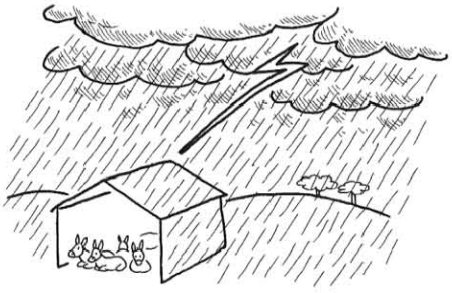

प्रश्न 9

गॉव, बाजार, गलियों मे कार्य करने वाले और भी पशुओ को देखें। किसी एक पशु का विशेष रूप से निरीक्षण करें। यदि यह एक जंगली जानवर होता और वह खुद अपने कार्य को चुन सकता तो क्या आप सोच सकते हैं कि यह प्राकृतिक रूप से कौन सा कार्य चुनता? उसके बाद सोचिए कि एक कार्य करने वाले पशु के साथ यदि इस तरह से व्यवहार किया जाता है तो वह इस स्थिति मे क्या चुनता? क्या अच्छा महसूस करने के लिए कुछ चीजें दूर रखना चाहिए जैसे दर्द, डर, भूख, या गर्मी ? क्या पशु वह सब चाहता है जो कि उसे पसंद नहीं?क्या यह जरूरत से दूर है ? जैसे कि खाना, सहानुभूति या अपने आप को आराम देना, अंगड़ाई लेना या रगड़ना।

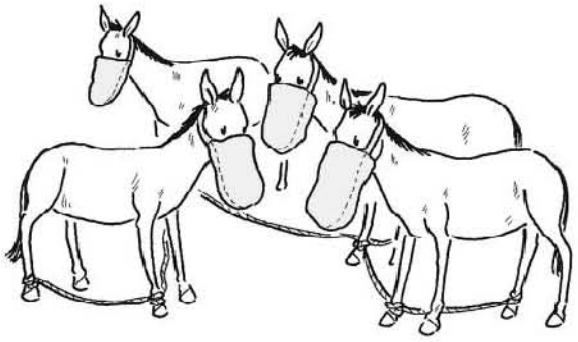

जंगली पशुओं के पास अपने समय का आनन्द लेने के बहुत सारे विकल्प होते हैं। यहाँ तक कि खेती में प्रयोग में आने वाले पशुओं के पास भी अक्सर विकल्प रहता है कि कब चलना है, कब लोटना है या खाना है। कार्य करने वाले पशुओं के पास बहुत कम समय होता है और जो होता है वह भी अप्राकृतिक। बुग्गी, हल, या पीठ पर बोझा ढ़ोना जैसे कार्य करने वाले पशु, दुसरे पशुओं के साथ घुलने मिलने, अपने पंसद के वातावरण को खोजने, सामान्य व्यवहार प्रदर्शन की आजादी से दूर रहते हैं। लम्बे समय तक पशुओं से काम लेना पशुओं को तनाव में रखता है, वे केवल थोड़ा बहुत आराम कर पाते हैं। जरूरत से ज्यादा वजन लादने, पिटाई करने, या बदतमीजी से चलाने या पकड़ने से कार्य करने वाले पशुओं के जिन्दगी में बुरे अनुभवों को लाता है। इन सबके लिए आदमी ही जिम्मेदार है।

जिन चीजों को पशु पसंद नहीं करते हैं, उनको दूर करना और उनको विभिन्न अवसर प्रदान करना, जिसे पशु प्राकृतिक रूप से चुन सके मनुष्यों के लिए सम्भव है।

प्रश्न 10

देखकर, सूंघकर, स्वाद से, छूकर, सुनकर आदि क्रियाओं द्वारा पशु नियमित रूप से अपनी ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करते हुए सूचनाएँ इकट्ठा करता रहता है– जो कि पशु को अपने आसपास के वातावरण के बारे में जानकारी देता है। नजदीक से बहुत सारे पशुओं को देखें, कौन और क्या सूचनाएँ वे अपने आसपास के वातावरण से प्राप्त कर रहे हैं? कैसे वे इकट्ठा कर रहे हैं? यह आप कैसे कह सकते हो?

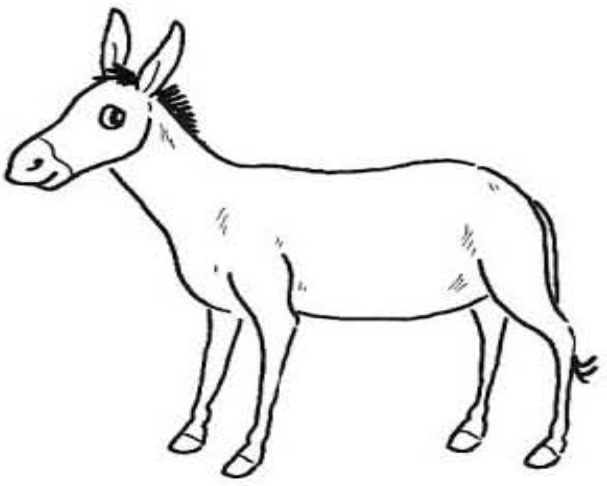

सूचनाएं उनके लिए क्यों महत्वपूर्ण हो सकती हैं?

जंगली जानवर अपनी सूचनाओं का प्रयोग खाना, पानी, छाया ढूंढने या शिकारी से बचने के लिए करते हैं। उनकी पहली प्राथमिकता जिन्दा रहना होता है। इसलिए वे देखते हैं कि वातावरण में बदलाव उनके लिए सुरक्षित है या खतरनाक है। पालतू व कार्य करने वाले पशु उन सभी ज्ञानेन्द्रियों को सुरक्षित रहने, दूसरे पशुओं व आदमियों के साथ जीने में प्रयोग करते हैं। और जितना सम्भव होता है अपनी जरूरतों की देखभाल करने के लिए प्रयोग में लेते हैं।

सिद्धान्त बॉक्स–4– शिकार जाति पशु की ज्ञानेन्द्रियॉ

कार्य करने वाले सभी पशु शिकार जाति के होते हैं, जंगली स्थिति में वे शिकारी द्वारा शिकार हो जाते थे तथा खा लिये जाते थें जैसे कि शेर व कुतों द्वारा। उनके जीने तथा शिकारी से बचने के लिये, ये पशु हमेशा से ही समूह में रहते हैं और विकसित ज्ञानेद्रियां रखते हैं जो कि उनको अपने आसपास के वातावरण की सूचनाएँ देती हैं।

उनकी ज्ञानेद्रिंया उनको बताती हैं कि

1 वातावरण में क्या उपस्थित है? 2 वहाँ पर कितना है? 3 यह कहाँ है? यह वातावरण कुछ भी हो सकता है?

4 यह गतिशील है या बदल रहा है 5 वह पहले की अपेक्षा कम है या ज्यादा? 6 उनके लिए यह अच्छा है या बुरा?

पशु ज्ञानेन्द्रियाँ

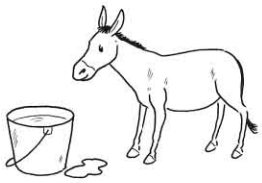

देखना

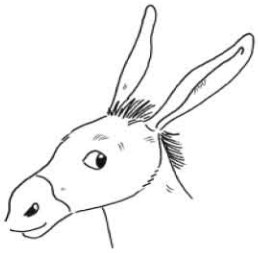

सुनना

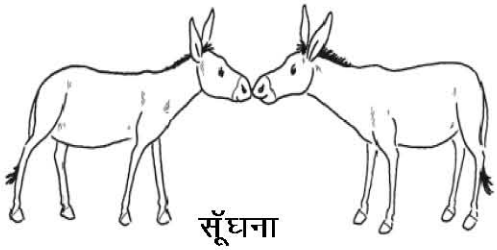

सूँघना

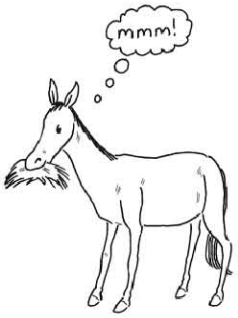

स्वाद

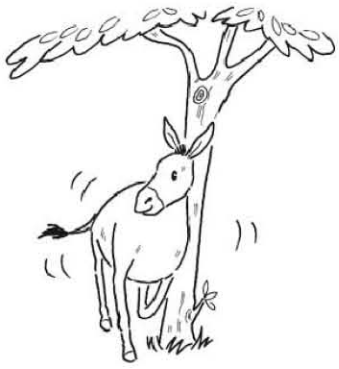

छूना

जब शिकार जातियॉ अपने वातावरण में कुछ डरावनी महसूस करते हैं तो वे भयभीत हो जाते हैं और अपने समूह के साथ भाग जाते हैं। लेकिन कार्य करने वाले पशु भाग नहीं सकते हैं और न ही उनका कोई समूह होता है, जिसमें कि वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके इसलिए वे शान्ति से और मजबूती से खड़े हो जाते हैं या अपने आपको बचाने के लिए लात मारते हैं या काटते हैं। यह डर में सामान्य व्यवहार है। उनके प्राकृतिक व्यवहार को जानकर आप उनके डर को हटा सकते हैं या कम कर सकते है, और उनको सुरक्षित महसूस करने मे मदद कर सकते हैं।

प्रश्न 11

अपने आसपास कार्य करने वाले पशु को दोबारा देखने के लिए 10 मिनट खर्च करें। आप कैसे जान सकते हैं कि पशुओं को उनकी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा इकट्ठा की गई सूचनाएँ आदमियों, दूसरे पशुओं या वातावरण के बारे में महसूस कराती है? ज्यादा से ज्यादा सूचनाओं को सूचीबद्व करें जो कि पशु कैसा महसूस कर रहा है, उसके साथ या उसके आसपास क्या हो रहा है, से प्राप्त कर सकते हैं? कौन सी भावना वे दिखा रहे हैं और कैसे दिखा रहे हैं?

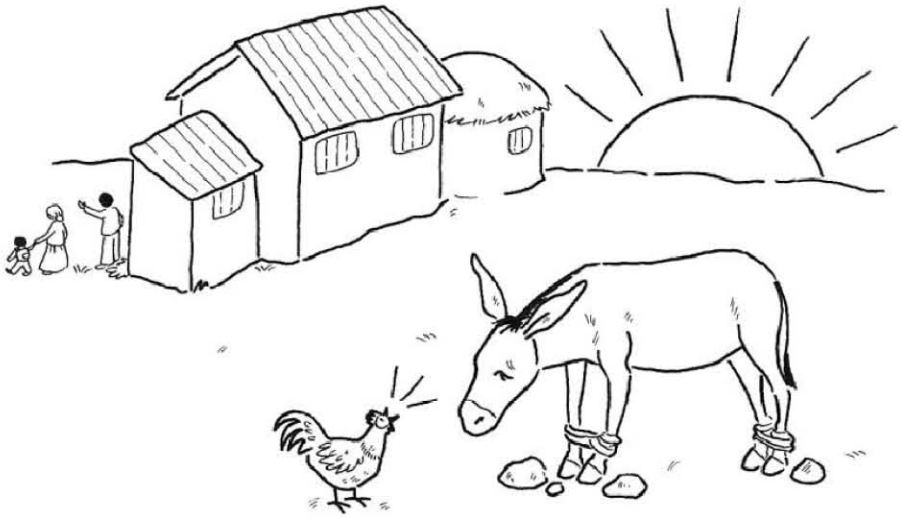

पशु अपने चारों तरफ की चीजों को अनुभव करते हुए आसपास के वातावरण, लोगों और दूसरे पशुओं के बारे में भावना पैदा करता है। जैसे कि मनुष्यों के साथ खुशी, आराम, डर, भय, दुख इत्यादि–इत्यादि भावना हो सकती है। जंगल में यही भावना वे जरूरत पूरा करने के लिए, अपने जीने की सम्भावना बढाने के लिए प्रयोग मे लेते हैं।

पालतू पशु (कार्य करने वाले पशु भी शामिल) अपने आसपास के वतावरण, लोग व दुसरे पशुओं के प्रति ये सभी भावनाएं रखते हैं। वे उन भावनाओं के प्रति व्यवहार कर सकते हैं। जैसे कि सूँघकर खाना, खतरनाक आवाज सुनकर भाग जाना या दूसरे के साथ घुलना–मिलना। यदि पशु अच्छा महसूस करेगा तो उसका कल्याण और भी अच्छा होगा। यद्यपि कार्य करने वाले पशु भी आतंकी हो सकते हैं। लेकिन उनकी जिन्दगी और कार्य स्थिति उनकी भावनाओं के प्रति कार्य करने की अनुमति नहीं देती है। उदाहरण के लिए यदि वे खतरा महसूस करते हैं लेकिन भागने व महफूज जगह ढूंढने मे असमर्थ होते हैं और यदि वे भोजन देखते हैं और साथ ही भूखे भी हैं किन्तु वहाँ तक पहुचने लायक नहीं होते हैं। कार्य करने वाले पशुओं को वातावरण उनको अच्छा महसूस करने के लिए तथा मुसीबतों से लड़ने के लिए मदद कर सकता है लेकिन यह सब निर्भर करता है कि पशु अपने आसपास की चीजों से कैसे घुलता मिलता है। यदि कार्य करने वाला पशु सही तरीके से जवाब नहीं देता है तो उसका शारीरिक व मानसिक कल्याण कमजोर है और वह खुद स्वयं खराब महसूस करता है।

आप कैसे कह सकते हैं कि पशु अच्छा महसूस कर रहा है तथा उसे वो सब मिल रहा है जो मिलना चाहिये ?

इस अवस्था में आप आश्चर्यचकित होंगे कि कैसे एक कार्य करने वाले पशु की आवश्यकता की पूर्ति हो सके ताकि वह अच्छा महसूस कर सके व अपने पूरे उत्पादक काम करने वाले जीवन को बनाए रख सके।

प्रश्न नम्बर 6 में पूछा गया कि आप कैसे महसूस करते हैं कि यदि आप पशु होते, लेकिन पशु आपको कैसे बता सकता है कि वह कैसा महसूस कर रहा है?

प्रश्न 12 :– कुछ दिये गये स्थितियों में कार्य करने वाला पशु कैसा व्यवहार प्रदर्शित कर रहा है अथवा कैसी प्रतिक्रिया कर रहा है? पशु जो अनुभव/महसूस कर रहा है वह उसके प्रतिक्रिया का एक कारण है जैसा कि आपने वर्णन किया है।

अः–शोरगुल

प्रतिक्रिया/व्यवहार .....

.....

समझ जो कि प्रतिक्रिया दर्शाता है.....

.....

ब :– अकेलापन अथवा अपने ही जैसे पशुओं से अलग रहना

प्रतिक्रिया/व्यवहार .....

.....

समझ .....

.....

स– मित्रवत लोगों व पशुओं को देखना

प्रतिक्रिया/व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

द – अमित्रवत लोगों व पशुओं को देखना

प्रतिक्रिया/व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

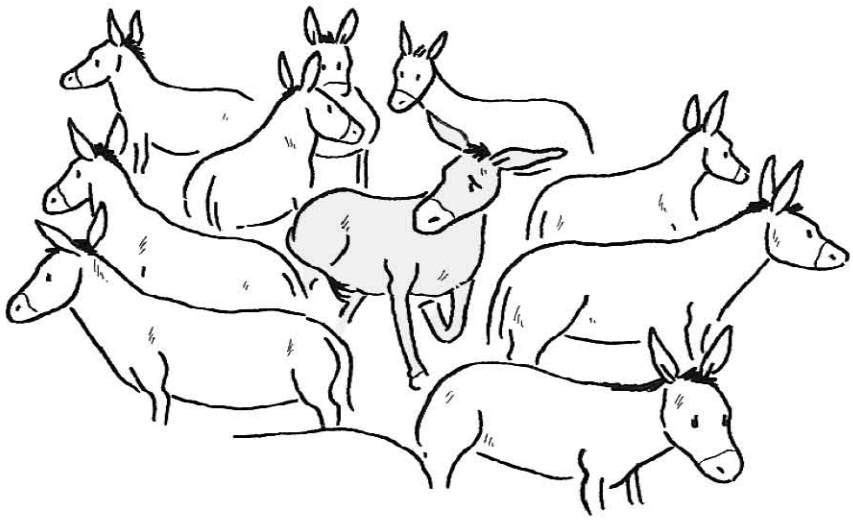

य– शान्त व सहज तरीके से संभालना

व्यवहार / प्रतिक्रिया.....

.....

समझ.....

.....

र – क्रोधित व अभद्र रूप से संभालना

व्यवहार / प्रतिक्रिया.....

.....

समझ.....

.....

ल – कुछ डरावनी वस्तु उसके नजदीक आये

प्रतिक्रिया / व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

व –कुछ डरावनी वस्तु पशु से दूर ले जाने पर

प्रतिक्रिया / व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

स –नई जगह यात्रा करने पर

प्रतिक्रिया / व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

क्ष – नए प्रकार का काम करने पर

प्रतिक्रिया / व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

त्र – गर्म दिनों में ठंडा पानी मिलना

प्रतिक्रिया / व्यवहार.....

.....

समझ.....

.....

.

व्यवहार पशु की मानसिकता को प्रदर्शित करने का एक साधन है। यदि वह डरा हुआ महसूस करता है तो वह ऐसा व्यवहार प्रदर्शित करेगा जैसे कि कान का पीछे करना, एकदम शान्त खड़े होना, लात मारना अथवा भाग जाना इन सभी चीजों को हम शारीरिक भाषा कहते हैं।यह महत्वपूर्ण है कि आप उसके व्यवहार से समझें कि आपका पशु आपको अपनी मनोदशा के बारे में क्या कहना चाहता है? यदि आप पहचान पाते हैं कि वह अच्छा

नहीं महसूस कर रहा है तो आप उसके विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करके उसके जीवन को बेहतर बना सकते हैं। जब वह अच्छा महसूस करना शुरू कर दे तो आप उसके व्यवहार में भी ऐसा ही महसूस करेंगे। वो शान्त, अपने कानों को आगे की ओर झुका कर रखेगा तथा आस–पास के पशुओं व आदमियों से अच्छा शान्त व्यवहार प्रदर्शित करेगा।

प्रश्न – 13

अब आपके पास काम करने वाले पशु को देखकर ज्यादा जानकारी व ज्यादा अनुभव है। अब बाहर जायें व ध्यान से 5–10 मिनट पशुओं को देखें। प्रत्येक पशु के लिए पहले लिखें कि वह क्या कर रहा है। उदाहरण के तौर पर गाडी खींच रहा है। फिर अवलोकन करें कि पशु किस तरह से क्या काम कर रहा है? उदाहरण के तौर पर गधा कैसे सामान ढ़ो रहा है? तथा कैसे गाड़ी खींच रहा है? कुछ वर्णित शब्द को जोड़ सकते हैं जैसे – आसानी से खींचना, जकड़न, आराम से, कठिनाई से, लड़खड़ाते हुए ।

पशु क्या कर रहा है ?	**वह कैसे कर रहा है ?**
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

सिद्धान्त बॉक्स – 5 पशु की भाषा में समझना – अनचाहा व्यवहार

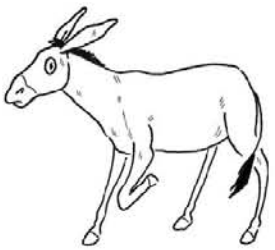

काम करने वाले पशु कभी–कभी ऐसा व्यवहार प्रदर्शित करते हैं कि उनके मालिक व उन्हें प्रयोग करने वाले उन्हें पसन्द नहीं करते हैं, जैसे –काटना, लात मारना, भागना अथवा आगे चलने से मना कर देना। लोग कह सकते हैं कि पशु आक्रामक, अड़ियल या समझ में नहीं आने वाला है।

याद रखें कि यह सब व्यवहार सामान्य है तथा ये सब पशु का अंदाज है जो कि दर्शाता है कि वह कैसा महसूस कर रहा है। अपने आप का बचाव करते हुए सुरक्षित महसूस कर रहा है। ये सूचित करता है कि पशु खुश है अथवा खुश नहीं हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि जब पशु उक्त अवस्था को प्रदर्शित करे तो उसकी आवाज को सुनें। पशु मालिक को उसकी बीमारी, चोट, उसके आस–पास की अव्यवस्था, काठी का दर्द अथवा पलान का दर्द आदि को देखने के लिए उत्साहित करें। किसी अन्य पशु, वातावरण अथवा व्यक्ति के उस पशु के साथ व्यवहार के कारण भी वह भय व तनाव को महसूस कर सकता है। यदि ये सब नहीं है तो ये समझा जा सकता है कि पशु से जो करने को कहा जा रहा है वह उसे समझ नहीं पा रहा है। अच्छा दयालुतापूर्ण प्रशिक्षण, अच्छा प्रबन्धन व सही हैंडलिंग से ये सारे गलत व्यवहार दूर किये जा सकते हैं तथा पशु व पशुमालिक जो इनके साथ काम करते हैं उनका जीवन सहज व सफल बनाया जा सकता है।

यदि आप पशु के व्यवहार तथा अनुभवों को देखने का अभ्यास करते हैं तो आप पशु के बारे में पशु नजरिया से ज्यादा जागरूक होंगे। पशु की शारीरिक भाषा तथा चेहरे के भाव में आये सूक्ष्म परिवर्तन को भी महसूस कर सकेंगें। वास्तविकता में प्राकृतिक रूप से आप पायेंगे कि पशु का व्यवहार एवं उसकी मानसिकता समझना और व्यक्त करना पशु के बिन्दु से कितना आसान है।

अच्छे व खराब पशु कल्याण के क्या लक्षण हैं ?

ध्यानपूर्वक पशु के भौतिक लक्षण एवं उसके व्यवहार को देखकर आप कह सकते हैं कि काम करने वाले पशु शारीरिक तथा मानसिक रूप से कैसा महसूस कर रहा है? अगले प्रश्नक्रम के बाद आप भौतिक व व्यवहारिक लक्षण को पहचान सकते हैं।

प्रश्न– 14

यदि एक पशुमालिक अपने पशु की आवश्यकता को समझता है तथा उसके अनुरूप उसको पूरा करता है तो आप पशु के शरीर पर क्या लक्षण देखेंगे जो कि उसके अच्छे शारीरिक कल्याण को प्रदर्शित करता है ?

.....

.....

.....

.....

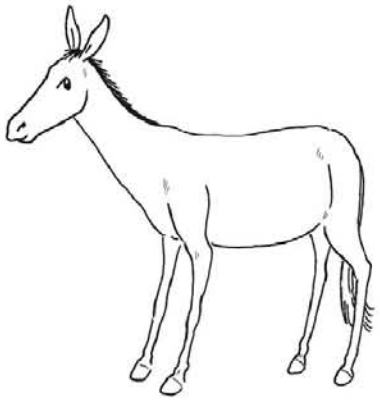

यदि इस पशु का मालिक इसके आवश्यकताओं की पूर्ति न करता हो तब आप पशु के शरीर पर भौतिक कल्याण के क्या लक्षण देखेंगे ?

.....

.....

.....

.....

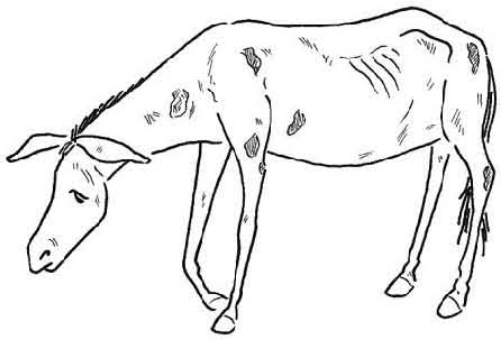

अपने आस पास देखें। अच्छे व खराब कल्याण के क्या–क्या लक्षण हैं जो कि अपने बाजार व गली में दीखते हैं?

उन सबको नीचे लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

एक पशु जो कि स्वस्थ व फिट नहीं है निश्चित रुप से वह खराब पशु कल्याण से गुजर रहा है। पशु को फिट रहने के लिए पशु को अपने पूरे काम करने वाले जीवन में अच्छे स्वास्थ्य व ऊर्जा की जरूरत होती है। अगर पशुओं के कल्याण को बाधित करने वाले समस्याओं को दूर कर दिया जाय एवं उनकी आवश्यकताओं को पूरी की जाये तो ऐसे पशु ज्यादातर धनात्मक शारीरिक लक्षण जैसे कि पशु का वजन , साफ व चमकीली त्वचा, ताकतवर पशु का पैर व गति, आस पास के वातावरण से जुड़ने की ऊर्जा व काम करने की इच्छा आदि को प्रदर्शित करता है।

जैसा कि आपने अध्याय –1 में देखा, काम करने वाले पशु की देखभाल व उनकी पूर्ति लोगों पर निर्भर करता है। जब लोग पशु की जरूरत को पूरा नहीं करते हैं अथवा उनसे अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं, ऐसे पशु अस्वस्थ तथा अनफिट होते हैं।

प्रश्न– 15

यदि पशुमालिक काम करने वाले पशु की जरूरत को समझ रहा है तथा इसको पूरा कर रहा है तो अच्छे मानसिक , भौतिक पशु कल्याण के क्या लक्षण दिखेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

यदि पशुमालिक अपने पशु की जरूरत को नहीं समझ रहा है तो उसके खराब मानसिक कल्याण के क्या–क्या लक्षण होंगे ?

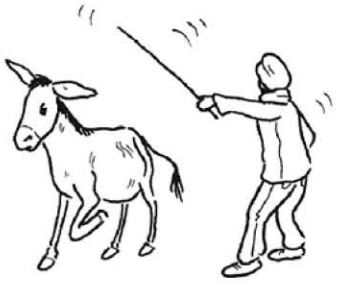

.....

.....

.....

.....

.....

क्या आपके उत्तर में पशु के व्यवहार तथा शारीरिक भाषा के उदाहरण सन्निहित हैं? याद रहे कि व्यवहार एक साधन है जिससे कि पशु अपनी भावना को अभिव्यक्त करता है–यह पशु की आवाज है। फिर आस–पास के पशुओं को देखें आप अच्छा व खराब मानसिक पशु कल्याण के क्या–क्या लक्षण देखते हैं ? उसे नीचे लिखें।

.....

.....

.....

.....

एक पशु जो कि मानसिक रूप से शांत व खुश नहीं है व खराब कल्याण से गुजर रहा है भले ही वह शारीरिक रूप से स्वस्थ है। धनात्मक मानसिक व भावनात्मक पशु कल्याण के सूचक में, सक्रिय, शिथिल रूप से खड़ा होना तथा चेहरे के भाव, खेलना, आस–पास के वातावरण को पहचानने की कोशिश करना व आस–पास के पशु तथा लोगों से मित्रवत पेश होना को शामिल करें।

जैसा कि मनुष्यों में होता है पशुओं को भी अच्छा महसूस करने के लिए उसे मानसिक व शारीरिक रूप से भी स्वस्थ होना होता है। अच्छा महसूस करने के लिए काम करने वाले पशु को अच्छे भौतिक अवस्था में तथा कम बीमारी या चोट की अवस्था में रहना चाहिए होना। उनके जीवन में बहुतायत मात्रा में धनात्मक व्यवहार तथा कम से कम ऋणात्मक व्यवहार को महसूस करना। यदि लोग अपने कार्य करने वाले पशु का ध्यान रखते हैं व

आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं तब ये पशु अच्छा महसूस करते है जैसे कि आराम, संतुष्ट, सहचर और नकारात्मक व्यवहार जैसे कि परेशान, तनाव, दर्द, भय, कष्टदायक तथा अकेलापन को छोड़ सकें।

प्रश्न 16

पशु की आवश्यकता पर विचार कर कह सकते हैं कि इनपुट संसाधन प्रबंधन का अभ्यास अच्छे पशु कल्याण में मदद करता है। अच्छे पशु कल्याण का लक्षण व सूचक इसका परिणाम है। नीचे दिये गये तस्वीर में से किस पशु में यह पशुमालिक के जीवनयापन में सर्वाधिक अच्छा हैं। आपको निर्णय लेने के लिए क्या पशु की आवश्यकताओं और लक्षण अथवा सूचक जो कि पशु पर परिणाम के रूप में दीखते हैं, पशु की आवश्यकताओं तथा उनके व्यवहार को समझकर हम उनके कल्याण से संबंधित समस्यायों को बढने से रोक सकते हैं।

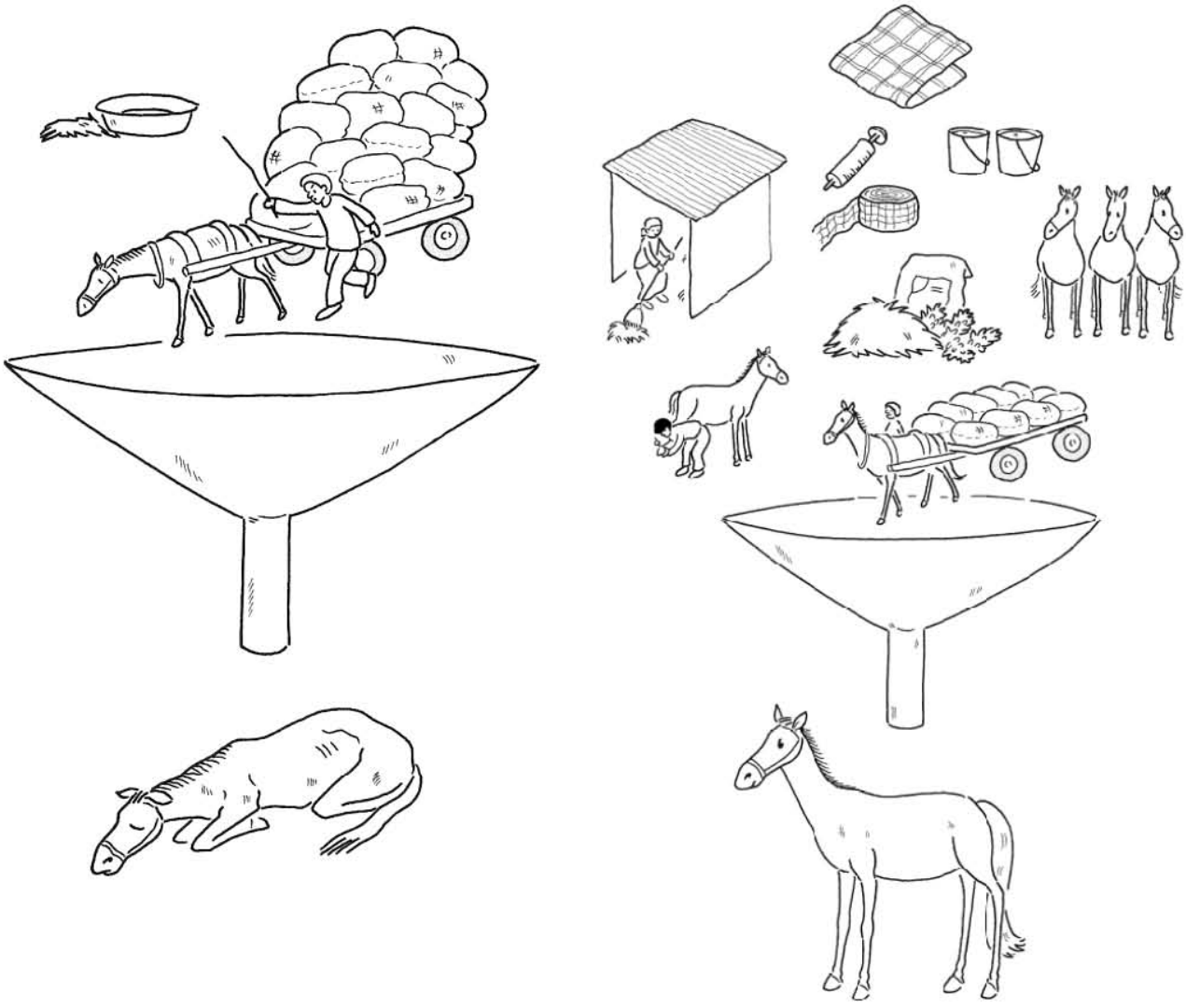

पशु कल्याण को सुधारने का सबसे महत्वपूर्ण रास्ता यही है कि उसके होने से पहले बचाव किया जा सके। पशु कल्याण कार्यक्रम के सुगमकर्मी के रूप में आपकी भूमिका यह है कि लोगों को इस लायक बनायें कि वो उनके खराब पशु कल्याण को जल्दी पहचान कर दूर कर सकें।

प्रश्न 17

कितनी मात्रा व संख्या में दिये गये इनपुट अथवा संसाधन (भोजन, पानी, आराम और अन्य जो भी पशु के लिए आवश्यक है) काम करने वाले पशुओं के अच्छे पशु कल्याण के लिए आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

सामान्य रूप से काम करने वाले पशु को उसके पूर्ण जीवन काल में सभी दिन, सभी मौसम में अच्छा महसूस कराना, पूर्ण रूप से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना व्यवहारिक व वारूतविक रूप से कठिन कार्य है। फिर भी ज्यादा से ज्यादा आवश्यकताओं को पूरा करें तथा इनकी भावनाओं को समझें/अच्छा संसाधन व प्रबंधन और खराब संसाधन व प्रबंधन हमेशा पशु में कुछ न कुछ बदलाव लाता है। कुछ बदलाव तुरंत छोटे समय के अंतराल में तथा कुछ लम्बे समय के अंतराल में प्रभाव डालता है। इनमें से सभी कार्य मूल्यवान हैं, कुछ न करने से अच्छा छोटा–छोटा कदम भी इस दिशा में महत्वपूर्ण है।

सिद्धान्त बाक्स नम्बर –6 – पशु कल्याण

पशु कल्याण एक जीवंत विषय है। कई पशु कल्याणकारी वैज्ञानिकों ने पशु कल्याण को परिभाषित व सरल तरीके से समझने के लिए कुछ ढाँचे का निर्माण किया है। जैसा कि केवल एक उत्तर नहीं है फिर भी आपकी समझ के लिए कुछ सामान्य ढाँचे या फ्रेमवर्क जो कि विभिन्न तरीकों से वैज्ञानिकों ने तैयार किया है, यहाँ दिया जा रहा है

अच्छा व तन्दुरुस्त महसूस करना

परिभाषा कहती है कि पशु का अच्छा कल्याण तभी संभव है जब वह तन्दुरुस्त एवं खुश रहता है अथवा तन्दुरुस्त एवं अच्छा महसूस करता है। तन्दुरुस्ती का मतलब यह है कि पशु अपने पूरे काम करने के जीवन के दौरान अपने स्वास्थ्य व ओज को स्थायी रख सके। अच्छा महसूस करना सुनिश्चित करता है कि पशु दिमागी रुप से स्वस्थ है और दूसरे शब्दों में वह कुछ सार्थक महसूस कर सकता है। हम सभी का उद्देश्य ये सुनिश्चित करना है कि वे किसी परेशानी से न गुजरें, सार्थक महसूस करें तथा अपने साथी के साथ सुरक्षा एवं आराम के साथ रहें।

भौतिक एवं मानसिक कल्याण तथा प्राकृतिक अवस्था

पशु कल्याण की सोच मुख्य रूप से तीन घटकों पर केन्द्रित है, जिसमें अच्छा व तन्दुरुस्त महसूस करना, यह सुनिश्चित करता है कि पशु की शारीरिक व मानसिक दोनों कल्याण महत्वपूर्ण हैं। कल्याण में पशु की प्राकृतिक अवस्था भी शामिल है जो यह बताता है कि पशु अपनी योग्यता के अनुरुप वह काम कर सके जो वह चाहता है जैसा कि वह प्राकृतिक व जंगल की अवस्था में करना पसन्द करता है। उदाहरण के तौर पर काम करने वाले गधे के लिए एक गधे जैसा बना रहना–चरना, रेंकना, अपने समूह से मिलना, ना कि लोगों के लाभ के लिए मशीन बने रहना।

पॉच आजादी

यह रुपरेखा पशु कल्याण के परिणाम को आजादी के संदर्भ में देखता है यानि ऐसी आदर्श स्थिति जिसमें हमें पशु को पहुँचाने के लिए काम करना है। प्रत्येक आजादी इनपुट (संसाधन व प्रबंधकीय प्रकियायें) जो कि कल्याण के लिए आवश्यक है, से जुड़ा हुआ है –

1) भूख व प्यास से आजादी →तुरंत साफ पानी व भोजन की आवश्यकता एवं समयानुसार उपलब्धता ताकि पशु का स्वास्थ्य, ओज एवं ऊर्जा बरकरार रहे।

2) असुविधाजनक स्थिति से आजादी→ उचित वातावरण, छाया व आरामदायक क्षेत्र के साथ–साथ मौसम से बचाव

3) दर्द, चोट अथवा बीमारी से आजादी→ तुरंत निदान व उपचार या बचाव के द्वारा।

4) सामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने की आजादी → पर्याप्त मात्रा में जगह, व्यवस्था और अपने प्रकार के पशुओं का साथ देकर।

5) भय व तनाव से आजादी→ ऐसी स्थिति व वातावरण का निर्माण जो कि मानसिक पीड़ा को दूर कर सकें।

अध्याय 1 व 2 को पूरा करने के बाद आप जैसा कि प्रत्येक ढॉचागत अभ्यास का प्रयोग करके पहचान सकते हैं।

आगे पढने के लिए

वेबस्टर, ए जे एफ मेन डी सी जे ,व्हे, एच आर (2004) वेलफेयर एसेसमेन्टः इन्डीसेज फ्राम क्लीनिकल आब्जरवेशन, एनीमल वेलफेयर 13,593–98

फ्रेशर डी वियरी, डी एम, पेजर, ई ए मिलीगेन, बी एन (1997), एक पशु कल्याण की वैज्ञानिक धारणा जो कि व्यवहारिक रूप से इसे प्रदर्शित करती है। पशु कल्याण 6,187–205

पॉच स्वतंत्रता (1979), फार्म एनीमल वेलफेयर काउन्सिल, यू के.।

समय व विभिन्न परिस्थितियों में कल्याण कैसे प्रभावित होता है ?

जब आप अगले तीन प्रश्न कर लेंगे तो आप पायेगें कि पशु कल्याण कम या ज्यादा समय के लिए अलग–अलग परिस्थितियों में कैसे प्रभावित होता है?

प्रश्न–18

जरा उन कार्य करने वाले पशुओं के बारे में सोचिए जिन्हें आपने आज देखा, जिनके बारे में आपने पहले सुना है या देखा है जो कि अलग–अलग जगहों पर रहतें हैं और अलग–अलग काम करते हैं। पशु की जरूरतें वातावरण के अनुसार कैसे परिवर्तित होती हैं। क्या स्वस्थ रहने के लिए और कार्य करने के लिए उनकी जरूरतें कुछ अलग और विशेष हैं।

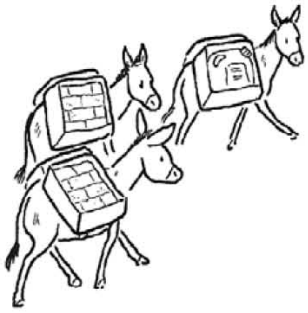

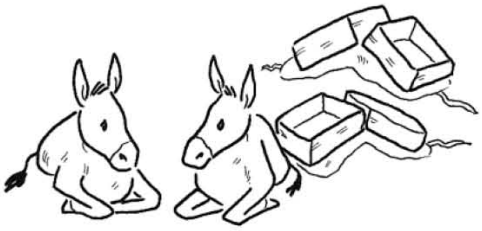

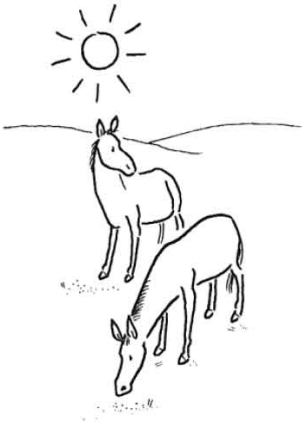

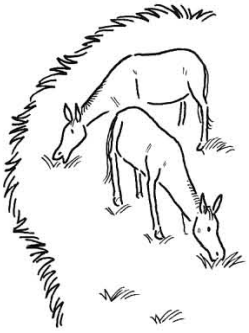

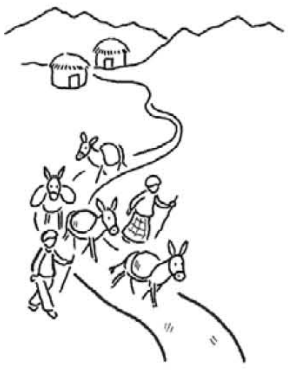

रहने और कार्य करने का वातावरण

.....
.....
.....
.....

यह पशुओ को कैसे प्रभावित करता है।

.....
.....
.....
.....

संसाधन और पशु का रखरखाव जो कि कार्य करने वाले पशु की आवश्यकताओं को पूरा करने के जिए जरूरी हैं किसी क्षेत्र की परिस्थिति और समय के अनुसार बदलते रहते हैं। आपके सुगमकर्ता होने के नाते यह जरूरी है कि आप उस वातावरण से परिचित हों जिसमें पशु जिन्दा रहता है कार्य करता है और आराम करता है। आपको इस अभ्यास को अलग–अलग समय पर अलग–अलग जगह पर करना चाहिए ताकि आप अपने लिए भी अलग–अलग जरूरतों व आवश्यकताओं को पहचान सकें।

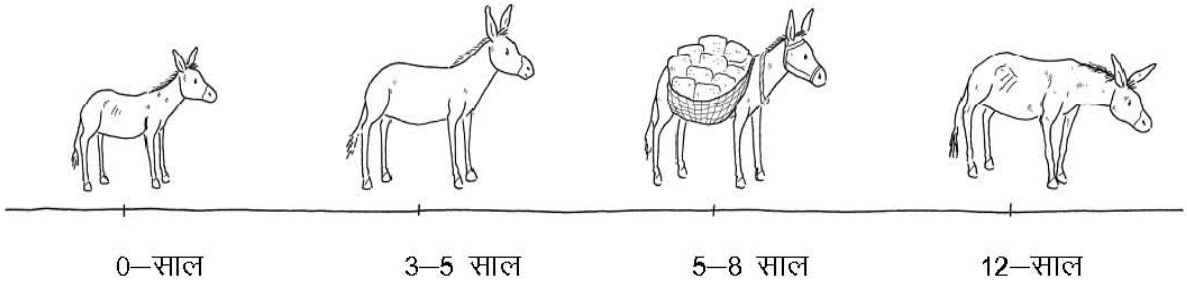

प्रश्न – 19

कार्य करने वाले पशु के कल्याण में उसके पूरे जीवनकाल के विभिन्न पड़ावो मे क्या क्या बदलाव व चुनौतियाँ आती है ? ये परिवर्तन क्यों होते हैं? जब पशु बुड्ढा होता जाता है तो उसका अनुभव कार्य के समय पर और आराम के समय पर कैसे प्रभावित होता है ?

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

अन्य लोगों की तरह ही पशु भी अपने जीवन काल में मानसिक एवं शारीरिक परिवर्तन एवं चुनौतियों का अनुभव करता है। जैसे–जैसे पशु उम्र के बीच में होता है या पशु बुड्ढा होता जाता है, पशु की आवश्यकताएं एवं भावनाएं परिवर्तित होती जाती हैं। इसके कई कारण है जैसे कि पोषण आवश्यकताओं में परिवर्तन, कार्य करने की क्षमता में परिवर्तन। पशु को आराम व रखरखाव जो कि वास्तव में उसे मिलना चाहिए और जो कि उसे मिल रहा है में परिवर्तन।

प्रश्न– 20

उन चुनौतियो व परिवर्तनों को सम्मिलित करें जो कि कार्य करने वाले पशु के कल्याण को प्रभावित करते हैं। जिन्हें कि आप साल में अलग–अलग मौसमों में अनुभव करते हैं। ये क्यों होते हैं?

जुताई का मौसम

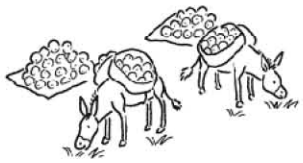

फसल कटाई का मौसम

भट्ठे का मौसम

....

....

....

एक साल के दौरान पशु मालिक, पशु और अन्य लोग मौसम, कार्य भार, भोजन की उपलब्धता, आय, जीवनयापन व पारिस्थितिक कारकों के अनुसार कई परिवर्तनों व चुनौतियों का अनुभव करते हैं। अलग–अलग देशों में और क्षेत्रों में एक साल में परिवार में अलग–अलग मौसम व समय के अनुसार परिवर्तन होते हैं और ये सब कार्य करने वाले पशु के कल्याण को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न–**21**–उन परिवर्तनों व चुनौतियों को सूचीबद्ध करें जो कि एक कार्य के दिन में पशु के कल्याण को प्रभावित करते हैं। ये क्यों होते हैं?

....

....

....

एक ही दिन में कार्य करने वाला पशु अपने कल्याण में परिवर्तन व चुनौतियों का अनुभव करता है। ये उनके रहन–सहन कार्य करने के क्षेत्र, आराम की जगह और उनकी स्वास्थ्य के अनुसार प्रभावित होते हैं। ये उन धनात्मक अनुभवों पर भी निर्भर करते हैं जो कि उन्हें उनके आस–पास के वातावरण, लोग और अपने आसपास के पशुओं के द्वारा प्राप्त होते हैं। लोगों को समझना चाहिए कि उनकी खुद की जरूरतें अनुभव और भावनाएं अलग–अलग मौसम में, साल में और दिन भर में कैसे परिवर्तित होती है। यह जीवन की सामान्य बात है कि आवश्यकताएं परिवर्तित होती हैं। पशु कल्याण एक स्थिर अवस्था नहीं है बल्कि एक बदलती हुई और परिवर्तित होती अवस्था है। पशु के कार्य में बदलाव व चुनौतियों को एक दिन मे महसूस कर लेते हैं। ये सब उनके रहने, कार्य करने, आराम करने तथा स्वास्थ्य स्थिति के द्वारा प्रभावित किया जाता है। ये सब उनके अच्छा महसूस करने के अवसर, जो कि उनके वातावरण व लोगों तथा उनके आसपास के दुसरे पशुओं द्वारा प्रदान किया

जाता है, पर भी पर निर्भर करता है। लोग जानते कि उनकी स्वयं की जरूरत व समझ, उम्र, मौसम, समय और एक दिन में भी, के अनुसार, बदल जाती है। यह एक मोटा तरीका है जिससे लोग जान जाते हैं कि उनकी स्वयं की जरूरत बदलने के अनुसार उनके कार्य करने वाले पशु की भी जरूरत व समझ बदल जाती है। पशु कल्याण एक स्थिर स्थिति नही है बल्कि यह बदलते रहने वाली स्थिति है। आपको सुगमकर्ता होने के नाते पशु रखने वाले समुदायों को प्रेरित करना है कि प्रति दिन, प्रति मौसम तथा पशु के पूरे जीवनकाल तक पशु कल्याण बढ़ाते रहना है। यह आपके पशु को लम्बा जीवन देगा तथा आपके परिवार के लिए फायदेमंद होगा।

प्रतिदिन कामकाजी पशुओं के कल्याण को कौन जानता है एवं प्रभावित करता है?

पिछले पूछे गये दो प्रश्नों के बाद आप जान गये होंगे कि कार्य करने वाले पशुओं के कल्याण के बारे में ज्यादा कौन जानता है। प्रतिदिन के हिसाब से और पशु कल्याण के विकास को फैसलिटेट करने के जिए यह आपके लिए जरूरी क्यों है?

प्रश्न– 22

कार्य करने वाले पशुओं का क्या होगा यदि उनकी आवश्यकताएं और भावनाओं का ख्याल न रखा जाये? उसके मालिक और परिवार के अन्य सदस्यों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

.....

.....

.....

.....

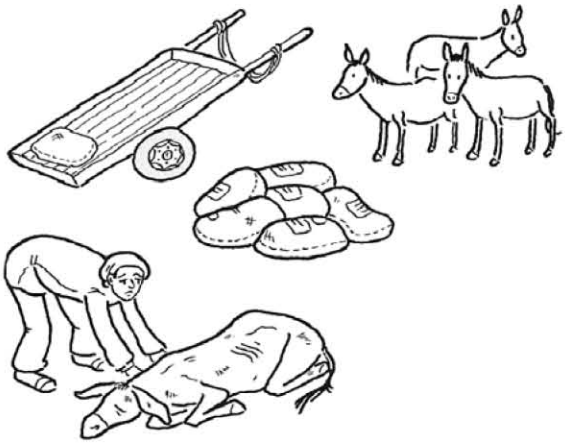

यदि अच्छा रखरखाव न हो तो पशु शीघ्र ही बीमार, कमजोर, नाखुश और बांझ हो जाता है। एक कार्य करने वाले पशु का यदि खराब रखरखाव होता है तो वह एक स्वस्थ व अच्छे रखरखाव वाले पशु के बराबर किसी परिवार की आमदनी नहीं कर सकता।

प्रश्न–23

एक कार्य करने वाले पशु की दैनिक जीवन व इसकी दैनिक जरूरतों व इसकी भावनाओं के बारे में सबसे ज्यादा कौन जानता है और क्यों ?

.....

.....

.....

.....

पशु मालिक व परिवार अपने पशु के साथ रहते हुए एक लम्बा समय व्यतीत करते हैं। वे जानते हैं कि उनकी और उनके पशु की कार्य करने व रहन–सहन की स्थिति कैसे बदलती है? वे यह जानते हैं कि वह और उनका पशु कब खराब कल्याण की स्थिति में है और पशु उनके लिए कब उपयोगी नहीं होता है और वह और उनका पशु कब स्वस्थ और खुश है। एक सुगमकर्ता होने के नाते आप यह नहीं देखते हैं कि दैनिक मौसम के अनुसार या पशु के पूरे जीवन भर में पशु की आवश्यकताएं और भावनाएं कैसे परिवर्तित होती हैं जो कि अलग–अलग परिवारों में अलग–अलग होती हैं। पशु का इलाज करने वाले, बाल काटने वाले या नालबन्द और दूसरे सेवाप्रदाता के पास इन सबकी पूरी जानकारी होती है। पशु मालिक उसका परिवार और आसपास के लोग पशु के मानसिक व शारीरिक कल्याण के बारे में सबसे ज्यादा परिचित होते हैं। यही वे लोग हैं जो एक बड़ा अंतर पैदा कर सकते हैं। आपके फैसिलिटेशन के द्वारा पशुमालिक पशु की सेवाओं को लेने वाले और उसकी अन्य जरूरतों को पूरी करने वाले अपना वास्तविक दैनिक अनुभव बांट सकते हैं। वो इस अनुभवरूपी धन को कार्य करने वाले पशु के कल्याण के उत्थान के लिए सामूहिक गतिविधियों के लिए कार्य योजना बनाने में प्रयोग कर सकते हैं।

अब तक आपकी समझ बनी कि –

- एक कार्य करने वाले पशु को देखकर आप व्यक्त कर सके कि वह अपने आसपास के लोगों के साथ किस प्रकार से जुड़ा है, उसका उसके चारों ओर के वातावरण और अन्य संसाधनो के साथ कैसा लगाव है?
- पशु के भाव क्या है ? और उसकी भावनायें क्यों है?
- कार्य करने वाले पशु के रखरखाव की जरूरतें और उसके संसाधन क्या है जो उसको खुश रखते हैं और उसे कार्यशील रखते है?
- एक पशु के शरीर व व्यवहार को देखकर अच्छे व खराब रखरखाव को पहचान सकते हैं ?
- कार्य करने वाले पशु का कल्याण उम्र व अलग–अलग समय के साथ कैसे परिवर्तित होता है ?
- पशु के कल्याण के उत्थान के लिए पशु मालिकों उसकी सेवायें लेने वालों और उसका रखरखाव करने वालों के साथ काम करना क्यों जरूरी है?

दूसरे भाग में हम देखेंगे कि कार्य करने वाले पशु के कल्याण के लिए पशु मालिकों के समूह, उनके परिवार और दूसरे सेवाप्रदाताओं को कैसे फैसिलिटेट करना है। यदि आप पशु कल्याण के बारे में ज्यादा जानना चाहते हैं तो इस पुस्तक के पहले के पन्नों और अनुक्रमणिका को देखें और अध्ययन करें।

केस स्टडी A मेरा गधा अब ज्यादा जीयेगा

स्रोत– मोहम्मद हम्माद, अहमद इ आई सरकावे और अमरो हसन, ब्रुक हॉस्पिटल–जनवरी 2010

केरो के निकट हेलवान क्षेत्र में भट्ठों का बड़ा समूह 200 लाख लाल ईंटें प्रतिदिन बनाता था। इस भट्ठे में 1500 गधे एवं 324 खच्चर ईंट की गाड़ियों को खींचते थें। भट्ठे के गधों की कल्याण की स्थिति बहुत खराब थी। जैसे कि शरीर में पानी की कमी, खराब शरीर, खुर की समस्यायें और पिटाई के घाव एवं जख्म। खराब परिस्थितियों के कारण उनकी मृत्यु दर अधिक थी और कई गधे कम उम्र में मर जाते थे।

ब्रुक कम्यूनिटी सचल चिकित्सा टीम ने हेलवान क्षेत्र में रोज जाकर पशुओं का इलाज किया। बुग्गी बनाने वालों, ईंट से भरी बुग्गी चलाने वालों, गधों और खच्चरों के साथ रोज काम करने वालों आदि के साथ पशुओं के रख रखाव व हैण्डलिंग की ट्रेनिंग की। ब्रुक टीम ने कार्य करने वाले पशु को स्वस्थ रखने व इसके लाभ क्या है को लेकर भट्ठा मालिकों के साथ मीटिंग को फैसिलिटेट किया। सन् 2003 में कल्याण के आंकलन के लिए भट्ठे के पशुओं का रेण्डम सेंपल किया। कुल 17 प्रतिशत गधों की उम्र 16 साल से ज्यादा थी। सन् 2009 में जहां पशु कल्याण का एसेस्मेंट किया गया तो 40 प्रतिशत गधों की उम्र 16 साल से ज्यादा पायी गयी। कई सालों से छोटे–छोटे एसस्मेंट ने गधों के कल्याण के उत्थान में एक बड़ा अन्तर पैदा किया जिससे कि मृत्यु दर घटी है और वे ज्यादा समय तक भट्ठों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

टीम ने कई भट्ठा मालिकों एवं पशु मालिकों के साथ मीटिंग की कि यदि आपने यह परिवर्तन देखे हैं तो आप इसके पीछे क्या कारण समझते हैं। भट्टा मालिकों ने देखा कि कार्य करने वाले पशु का टर्न–ओवर तेजी से घट गया। अब पशु ज्यादा समय तक जिन्दा रहता है और ज्यादा पैसा भी पैदा करता है। जिससे पशु की कीमत भी बढ़ गयी। 45 साल के भट्ठा मालिक अब्दुल सत्तार ने कहा कि समय पर इलाज, उसका अस्तबल साफ रखने और पीने के पानी की व्यवस्था सही होने के कारण उसके गधों की उम्र लम्बी हुई है। एक दूसरे भट्ठा मालिक ने कहा कि मोबाइल टीम के सहयोग से क्षेत्र में उपलब्ध और खरीद सकने वाले चारे दाने से अत्यधिक काम वाले सीजन के फीडिंग प्रैक्टिस में सुधार करके गधों की उम्र लम्बी हुई हैं उसने कहा कि हमारे गधे साल भर चारा दाना पाते हैं इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अब वे ज्यादा समय तक जिन्दा रहेंगे।

32 साल के एमद एवो होरिएब जो कि कई गधों के मालिक हैं, ने बताया कि पीने के पानी की एक बड़ी समस्या थी जिससे गधे काम के समय में परेशान थे। होरिएब ने प्रयास किया कि पशु को ज्यादा पीने का पानी मिले इसके लिए उन्होंने पीने के पानी को अस्तबल के अंदर ही उपलब्ध कराया जिससे कि पशु को पानी पीने का ज्यादा अवसर मिला। उन्होंने कहा कि इसके बाद से मैंने अनुभव किया कि मेरे पशु खुश हैं और स्वास्थ्य में सुधार है।